जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में शुद्ध उच्चारण करने में आने वाली समस्याओं के कारण व उनके निराकरण का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

श्री संदीप कुमार मीणा, अ., राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, बासी मुन्दड़ा, सुजानगढ़, चूरू

1. शीर्षक :–
   ''विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में शुद्ध उच्चारण करने में आने वाली समस्याओं के कारण व उनके निराकरण का प्रयास।''
2. पृष्ठभूमि की आवश्यकता एवं महत्व :–
   मानव ज्ञान के विकास के लिए अनुसंधान आवश्यक है तभी जीवन का विकास संभव है। जब शिक्षक अपनी व्यक्तिगत समस्या को स्वयं वैज्ञानिक ढंग से हल करता है, विषय विशेष से संबंधित अनभिज्ञताओं, उलझनों, प्रश्नों का हल ढूंढ़ने की आकांक्षा रखता है। अपने निर्णय और क्रियाओं में निर्देशन, सुधार और मूल्यांकन करता है। मुझे इसकी आवश्यकता तब महसूस हुई जब मै कक्षा–8 में अंग्रेजी विषय का शिक्षण कार्य करवा रहा था मै जब पैरेग्राफ रिडिंग करवा रहा था तब मैने महसुस किया अधिकांश बच्चें रोजाना रूटीन शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं कर पा रहे थे। इस समस्या से निजात पाने के लिए मैंने कक्षा–कक्ष में ज्यादा से ज्यादा रोजान रूटीन शब्दों को अंग्रेजी में बोलने का उपयोग शुरू किया। कक्षा–कक्ष के अन्दर बच्चों को ज्यादा से ज्यादा अंग्रेजी में बोलने का आत्मविश्वास पैदा किया। साउण्ड वर्ड चार्ट बनाकर कक्षा में चिपकाने व उसका अभ्यास करने के लिए प्रत्येक बच्चे को प्रेरित किया। बच्चों की झिझक को दूर करने के लिए Good morning, Good evening, Standup जैसे शब्दों का प्रयोग शुरू किया। कक्षा–कक्ष के अन्दर ग्रुप बनाकर गतिविधि आधारित कार्य करवाया। मैने ऐसे वाक्य चुने जो बच्चों ने कभी नहीं सुने थे। इस तरह मैंने कक्षा वातावरण तैयार किया और मुझे अच्छी सफलता भी प्राप्त हुई। बच्चे अब आसानी से बिना झिझक के रूटीन शब्दों का सही उच्चारण करने लगे।
3. सीमांकन :–
   रा.बा.उ.प्रा. विद्यालय के कक्षा 8 के कुल 13 विद्यार्थियों पर किया गया है।
4. शोध के उद्देश्य :– विद्यार्थियों के भाषा उच्चारण में आने वाली समस्या की जानकारी करना। बच्चें कक्षा–कक्ष में शब्दों का सही उच्चारण करने का प्रयास करेंगे।
5. क्षेत्र :– शैक्षणिक।
6. शोध के कारण व साक्ष्य :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	जब कक्षा में बच्चे से पैरेग्राफ रिडिंग करवा रहा था तो पाया कि कुछ बच्चें कठिन शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर पा रहे थे।	अवलोकन
2.	विद्यालय के अन्य शिक्षकों ने भी अपनी राय दी कि कुछ बच्चे उनके शिक्षण के दौरान भी इस तरह के उच्चारण नहीं कर पाते है। गणित में भी समस्याओं को शब्दों में शुद्ध नहीं बोल पाते है।	अन्य विषय शिक्षकों से चर्चा।

7. परिकल्पना :–
   शोध के द्वारा यह परिकल्पना की जाती है कि अंग्रेजी भाषा का सही उच्चारण विद्यार्थी कर सकें। सही उच्चारण के लिए बार–बार रिपिट करने की प्रक्रिया का दोहरान।
8. क्रियात्मक के परीक्षण हेतु कार्ययोजना :–

क्र.स.	कार्ययोजना	कार्य जो करना है	साधन/उपकरण	समयावधि
1.	Alphabet letter	Vowel sound, chart, words, practice	a/aa/i/ee/u/oo/e/ai/o/au/an/ah	6
2.	Activity	Workbook, activity based rhyming	textbook	4

		words		
3.	Introduction	Daily routine words practice	look, book, cook, chart, knowledge	9

9. सारणी– मूल्यांकन के आधार पर :–

क्र.स.	श्रेणी	I		II		III	
1.	मेधावी	3	20%	3	20%	7	55%
2.	औसत	5	40%	5	40%	5	40%
3.	कमजोर	5	40%	5	40%	1	05%
		13		13		13	

10. दत विश्लेषण :–

क्रियात्मक अनुसंधान के दत संकलन से एकत्रित आकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि प्रायोजना प्रारम्भ करने से पूर्व किये गये अवलोकन में कक्षा 8 के विद्यार्थी अंग्रेजी शब्दों का Pure pronounuation उचित प्रकार से नहीं कर पा रहे थे। गहन अवलोकन के द्वारा ज्ञात हुआ कि उनमें अंग्रेजी पढ़ने में उचित अभ्यास की नितांत अभाव था। अवलोकन से यह भी ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों मं आत्मविश्वास का भी नितांत अभाव था। विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति रूचि बढ़ाने के साथ–साथ विविध क्रियात्मक व गतिविधि करवाई गई, जिससे विद्यार्थियों में आश्चर्यजनक तरीके से सुधार देखा गया तथा लगभग विद्यार्थी रोजाना रूटिन में अंग्रेजी शब्दों को अपनाने लगे तथा Pure pronounuation का स्तर कक्षा स्तर के अनुरूप दिखाई देने लगा।

11. निष्कर्ष :–

शोध के बाद देखा गया कि सभी विद्यार्थी अंग्रेजी विषय के प्रति रूचि दिखाने लगे। विद्यार्थियों को उनकी रूचि व परिवेश से संबंधित विषयों पर बोलने का मौका मिला। शोध कार्य करने से उनके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई। उनमें अभिव्यक्ति कौशल का विकास हुआ।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों में गणितीय संक्रियाओं को व्यवहारिक जीवन से जोड़कर सिखाने का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

मो. याकूब खान मोयल, अ., ठा. देवीसिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कांगड़, रतनगढ़, चूरू

1. ''विद्यार्थियों में गणितीय संक्रियाओं को व्यवहारिक जीवन से जोड़कर सिखाने कर प्रयास''।
2. शोध की प्रस्तावना :–
   एक विषय के रूप में गणित मनुष्य के दैनिक जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा हुआ है। दैनिक जीवन के साथ ही विज्ञान और प्रौधोगिकी के इस युग में गणित की शिक्षा का ठोस आधार सभी के लिए परम आवश्यक समझा जाता है। विचार, तर्क व विश्लेषण शक्ति के विकास के लिए वर्तमान समय में गणित अति आवश्यक है। एनसीएफ 2005 व आरटीई 2009 में विभिन्न प्रकार के नवाचारों द्वारा गणित को व्यवहारिक जीवन से जोड़कर सीखाने पर बल दिया गया है।
3. शोध का औचित्य :–
   अक्सर यह देखने में आया है कि छात्र प्राथमिक कक्षा से ही गणित विषय को अत्यधिक कठिन विषय मानकर 'गणित फोबिया' से ग्रसित हो जाते है जिससे प्राथमिक स्तर से गणित विषय में कमजोर रह जाते है। इसका प्रमुख कारण इस समस्या के रूप में देखा गया है कि विद्यार्थी गणितीय तथ्यों को वास्तविक जीवन से नही जोड़ पाते है। जिससे उन्हे गणित केवल अंक जाल वाला विषय लगता है। अतः यह आवश्यकता महसूस की गई कि अध्यापकों द्वारा गणित विषय को दैनिक जीवन की गतिविधियों से जोड़कर सीखाने की आवश्यकता महसूस की गई जिससे छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और वे गणित विषय को सीखने के प्रति रूचि उत्पन्न कर सकेंगे।
4. सीमांकन :–
   ठाकुर देवीसिंह रा.उ.मा.वि., कांगड़ के कक्षा 5 के विद्यार्थियों तक सीमित है।
5. शोध उद्देश्य :–
   संक्रियाओं के अधिगम में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना। आकृतियों के अधिगम को सुगम बनाने का प्रयास करना।
6. क्षेत्र :– शैक्षिक ।
7. शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	छात्रों द्वारा गणितीय संक्रियाओं से संबंधित दैनिक जीवन के सामान्य प्रश्नों का उतर नही दे पा रहे है।	प्रश्नोतर द्वारा
2.	छात्र गणितीय संक्रियाओं को हल नही कर पा रहे है।	गृहकार्य जांच
3.	छात्र ज्यामितीय आकृतियों को पहचान नही कर पा रहे है।	चित्र के साथ प्रश्नोतर द्वारा
4.	दैनिक जीवन के हिसाब किताब के सामान्य प्रश्नों का सही जवाब नही दे पाना	प्रश्नोतर द्वारा

8. क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–
   पूर्व निर्धारित उद्देश्यों कि प्राप्ति के लिए पूर्व निर्धारित समस्या के लिए निम्न परिकल्पनाएं निर्धारित की गई –
   - गणितीय संक्रियाओं को दैनिक जीवन से संबंद्ध कर अध्यापन कराना जिससे छात्रों में गणितीय संक्रियाओं की समझ स्थाई हो सकेगी।
   - दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं से ज्यामितीय आकृतियों की पहचान करवाएंगे जिससे छात्र उन आकृतियों को आसानी से आत्मसात कर सकें।

- ऐकिक नियम से संबंधित प्रश्न आसानी से हल कर सकेगें।

9. क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतू कार्ययोजना :–

पूर्व परीक्षण

क्र.स.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक
1.	पूनमचंद	20	5
2.	मनीषा ढ़ाका	20	4
3.	अशोक लुहार	20	3
4.	अभिषेक	20	5
5.	मधुसुदन	20	4
6.	रविश	20	7
7.	वासुदेव	20	2
8.	मोनिका	20	4
9.	पूजा	20	2
10.	अमित कुमार	20	4

10. कार्ययोजना का क्रियान्वयन :–

मेरे द्वारा ठा. देवीसिंह रा.उ.मा.वि., कांगड़ कि प्राथमिक कक्षाओं में विशेषतः कक्षा 5 में गणित विषय का स्तर जांचने पर पाया कि छात्रों कि गणित विषय के प्रति रूचि कम है तथा उनका गणित विषय में अधिगम स्तर न्यून है तथा गणित में संक्रियाएं व ज्यामितीय आकृतियों की पहचान करने में असहजता सहसूस कर रहें है।

- गतिविधि 1 :– सर्वप्रथम छात्रों को आयत,वर्ग, त्रिभूज, वृत कि आकृति श्यामपट्ट पर बनाकर उनके नाम बताने के लिए कहा गया, जिसमें से कुछ छात्रों द्वारा बिल्कुल गलत जवाब दिए गए तो कुछ छात्रों द्वारा त्रुटिपूर्ण जवाब प्रस्तुत किए।
- गतिविधि 2 :– अब छात्रों से दैनिक जीवन में काम आने वाली बहुत सामान्य सी वस्तुओं जैसे – ईंट, चारपाई, चूड़ी, माचिस की डिब्बी, साईकिल के पहिए, पतंग, कमरे की आकृति इत्यादि का उदाहरण देकर आयत, वर्ग, त्रिभुज व वृत की आकृतियों की पहचान करवाई गई।
- गतिविधि 3 :– छात्रों से आयत, वर्ग, त्रिभुज व वृताकार आकार वाली वस्तुओं के 2–2 चित्र बनाने का अभ्यास करवाया गया।
- गतिविधि 4 :– छात्रों को दैनिक जीवन के हिसाब किताब व संक्रियाएं सीखाने के लिए 'बनिया व ग्राहक' नाटक के मंचन द्वारा उक्त संकिया सीखने को व्यवहारिक जीवन से जोड़ा गया।
- गतिविधि 5 :– छात्रों को नाटक मंचन व दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं से अध्ययन कराने से छात्रों में गणितीय संक्रियाओं को हल करने में रूचि जागृत हुई। तथा उन्हे पैन, पेंसिल, रबर, शॉपनर आदि पुरस्कार दिए जाने से सभी छात्रों में गणितीय संक्रियाओं को हल करने तथा पुरस्कार प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न हुई तथा छात्र धीरे–धीरे गणित विषय में रूचि लेने लगे।

11. प्रयुक्त शोध उपकरण :–

स्वनिर्मित प्रश्नावली।

एबीएल किट।

कार्यपुस्तिका।

गृहकार्य जांच।

12. न्यादर्श :–

मेरी समस्या शैक्षिक थी और यह समस्या ठा. देवीसिंह रा.उ.मा.वि., कांगड़ के कक्षा 5 के 10 छात्र मेरा न्यादर्श थे।

13. विधि :–

क्रियात्मक शोध में समस्या समाधान के लिए निदानात्मक तथा उपचारात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

पश्च परीक्षण :–

क्र.स.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक
1.	पूनमचंद	20	20
2.	मनीषा ढ़ाका	20	18
3.	अशोक लुहार	20	16
4.	अभिषेक	20	8
5.	मधुसुदन	20	9
6.	रविश	20	20
7.	वासुदेव	20	18
8.	मोनिका	20	17
9.	पूजा	20	16
10.	अमित कुमार	20	19

M_2=16.3 J_2=4.13

14. निष्कर्ष :–

क्रियात्मक शोध के पश्चात् प्राप्त परिणामों व अनुभवों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक बच्चे में सीखने की क्षमता होती है। वस्तुतः सीखने के तरीके व मार्ग पृथक–पृथक हो सकते है। यदि बच्चों को उनकी आवश्यकता व रूचि के अनुसार अलग–अलग गतिविधियों द्वारा कक्षा कक्ष के ज्ञान को व्यवहारिक ज्ञान से जोड़ दिया जाए तो बच्चों में आशानुरूप परिवर्तन आना निश्चित ही है।

तुलनात्मक परिणाम का अध्ययन :–

क्र.स.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्व परख			पश्च परख		
		प्रारम्भिक स्थिति			द्वितीय स्थिति		
		पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत
1.	पूनमचंद	20	5	45	20	20	100
2.	मनीषा ढ़ाका	20	4	20	20	18	90
3.	अशोक लुहार	20	3	15	20	16	80
4.	अभिषेक	20	5	25	20	8	40
5.	मधुसुदन	20	4	20	20	9	45
6.	रविश	20	7	35	20	20	100
7.	वासुदेव	20	2	10	20	18	90
8.	मोनिका	20	4	20	20	17	85
9.	पूजा	20	2	10	20	16	80
10.	अमित	20	4	20	20	19	95

	कुमार						

$M_{1=}$ 4.4 O_1=2.06 M_2=16.3 O_2=4.13 CR=8.15

15. सुझाव :–

क्रियात्मक शोध के पश्चात् बच्चों में व्यवहारगत अधिगम स्तर उच्च हो रहा है। अतः इस अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन के लिए किये गए प्रयास यद्यपि अपेक्षाकृत अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक है लेकिन इसके साथ ही इसमें और अधिक छात्र शिक्षक सहभागिता सम्मिलित कर इसे और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''कक्षा 8 में गणित विषय की मूलभूत संक्रियाओं की न्यून समझ में उन्नयन का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

श्री विकास कुमार, अध्यापक, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, केरली बास, राजगढ़, चूरू

शीर्षक :–

''कक्षा 8 में गणित विषय की मूलभूत संकियाओं की न्यून समझ में उन्नयन का प्रयास ''।

समस्या चयन की पृष्ठभूमि/प्रस्तावना :–

प्राय विद्यालयों की उच्च प्राथमिक कक्षाओं में गणित विषय का अध्यापन करवाते समय यह देखा जाता है कि विद्यार्थी लगभग हर प्रकरण में विषय की मूलभूत संक्रियाओं से संबंधित छोटी–छोटी गलतियां कर ही देते है जिसके कारण अन्ततः पूरा सवाल ही गलत हो जाता है। इसका मूल कारण विद्यार्थियों में इन संकल्पनाओं तथा पांच अंको तक की संख्याओं को लेकर व्यावहारिक, वैकल्पिक तथा पक्का ज्ञान ना होना है। जिसके कारण बच्चों की विचार प्रक्रिया का गणितीयकरण नही हो पाता। इस हेतु यह एक सामान्य मत है कि संक्रियाओं में समझ विकसित करने के लिए तथा संकल्पनाओं को मूर्तता प्रदान करते हुए अधिगम प्रणाली में सुधार अपेक्षित है जो विद्यार्थियों के चिंतन बहुआयामी बनाने में सहायक हो।

समस्या चयन के उद्देश्य :–

बालकों की इस विषयगत शैक्षिक समस्या के चयन के निम्न आधारभूत उद्देश्य लक्षित किऐ गऐ।

- कक्षा शिक्षण के दौरान सामान्य संक्रियाओं को विद्यार्थियों द्वारा मौखिक रूप से अल्प समय में हल कर पाने कर कौशल विकसित कर पाना।
- विद्यार्थियों में मौलिकता, तार्किकता तथा रूचि जागृत करना।
- विद्यार्थियों द्वारा गणितीय संक्रियाओं को अपने दैनिक जीवन से जोड़ पाने का कौशल विकसित कर पाना।

क्षेत्र :– शैक्षिक ।

समस्या का परिक्षेत्र/सीमांकन :– रा.उ.प्रा. विद्यालय, केरली बास के कक्षा 8 के विद्यार्थी।

शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	मौखिक रूप से संक्रियाओं से संबंधित सवालों के उतर न दे पाना	विद्यार्थियों से वार्तालाप
2.	इकाई परख में छात्रों का न्यून प्रदर्शन	परीक्षाफल रजिस्टर तथा परीक्षा उतर पुस्तिका
3.	कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों द्वारा संक्रियाओं में अधिक समय का लगना	कक्षा अवलोकन
4.	गणित शिक्षण के दौरान बच्चों की न्यून सहभागिता एवं जिज्ञासा	कक्षा अवलोकन

क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–

विद्यार्थियों में गणित की मूल संक्रियाओं की न्यून समझ को विकसित करने हेतु निम्न क्रियात्मक परिकल्पनाऐं परिकल्पित की गई–

- छात्रों को 6 अंको तक की संख्याओं को अंको व शब्दों में लिखने का पर्याप्त अभ्यास करवाया जाऐ
- छात्रों को मूलभूत संक्रियाओं के आपसी संबंधों की जानकारी देते हुए सतत अभ्यास करवाया जाऐ।

- विभिन्न गणितीय संक्रियाओं से जुड़ी पहेलियों का कक्षा शिक्षण में उपयोग तथा गणितीय सूत्रों की मूर्त व्याख्याऐं की जावें।
- ज्यामितीय आकृतियों की पहचान का अभ्यास।

उपकरण :– साक्षात्कार, अवलोकन, पूर्व व पश्च परख पत्र, इकाई परख आदि।

कार्ययोजना का क्रियान्वयन :–

क्र.स.	गतिविधियां	समय	मूल्यांकन
1.	पूर्व परख	1 दिन	पूर्व परख पत्र
2.	6 अंको की संख्याओं की पहचान तथा उन्हे अंको व शब्दों में लिखने का अभ्यास	2 दिन	इकाई–परख
3.	संक्रियाओं का पर्याप्त अभ्यास व मौखिक गतिविधियां	2 दिन	इकाई–परख
4.	ज्यामितीय आकृतियों की पहचान का अभ्यास	2 दिन	इकाई–परख
5.	पश्च परख	1 दिन	परख पत्र
6.	प्रतिवेदन	1 दिन	–

न्यादर्श :–

रा.उ.प्रा. विद्यालय, केरली बास, की कक्षा 8 के 10 विद्यार्थी।

दत संकलन :–

सारणी क्रमांक 1

इकाई मूल्यांकन के आधार पर–

क्र.स.	श्रेणी	प्रथम		द्वितीय		तृतीय	
1.	मेधावी	2	20	2	20	2	20
2.	औसत	3	30	4	40	5	50
3.	कमजोर	5	50	4	40	3	30
	योग	10		10		10	

सारणी क्रमांक 2

पूर्व परख व पश्च परख जांच के आधार पर

क्र.स.	श्रेणी	प्रथम		द्वितीय	
1.	मेधावी	0	0	2	20
2.	औसत	2	20	5	50
3.	कमजोर	8	80	3	30
	योग	10		10	

दत विश्लेषण :–

क्रियात्मक अनुसंधान के दत संकलन से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि प्रायोजना प्रारम्भ करने से पूर्व लिए गये पूर्व जांच पत्र में एक भी विद्यार्थी मेधावी नहीं था। 2 छात्र औसत दर्जे के व 8 छात्र कमजोर थे अर्थात कुल विद्यार्थियों में 20 प्रतिशत विद्यार्थी औसत तथा 80 प्रतिशत विद्यार्थी कमजोर की श्रेणी में थे।

कार्ययोजना के अन्तर्गत उपचारात्मक शिक्षण के दौरान प्रथम इकाई परख के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि छात्रों के शैक्षिक स्तर में थोड़ा सुधार हुआ इसमें 2 छात्र मेधावी, 3 औसत एवं 5 कमजोर रहे। द्वितीय परख के पश्चात मेधावी छात्रों की संख्यां में तो कोई परिवर्तन नही हुआ

परन्तु औसत दर्जे के छात्रों की संख्यां बढकर 4 तथा तृतीय परख में यह संख्यां 5 हो गई तथा कमजोर छात्रों की संख्यां 3 रह गई। क्रियात्मक अनुसंधान के अंतिम चरण में पश्च परख में 2 छात्र मेधावी, 5 छात्र औसत तथा 3 छात्र कमजोर रहे। अर्थात 70 प्रतिशत छात्रों में संक्रियात्मक समझ का विकास हुआ है परन्तु 30 प्रतिशत विधार्थी अभी भी कमजोर रहे। शोधकर्ता का इस बारे मे मत है कि प्रायोजना के अन्तर्गत शिक्षण कार्य एवं अभ्यास कार्य में ये 30 प्रतिशत विद्यार्थी भी अपेक्षाकृत धीमी गति से सीख पा रहे है।

निष्कर्ष :–

- मूलभूत संक्रियाओं को पृथक–पृथक करके शिक्षण करवाया जाना अधिगम में सुगमता प्रदान करता है।
- पहाड़े याद करना तथा उन्हे संक्रियाओं में लागू करना इस स्तर पर थोड़ा कठिनाई वाला कार्य है।
- छात्र विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों में परस्पर संबंध एवं अन्तर करने में कठिनाई महसूस करते है।

सुझाव :–

- परिकल्पना के अनुसार कार्य योजना में अधिक समय तक निरन्तरता की आवश्यकता महसूस की गई।
- इसे छोटी कक्षाओं से प्रारम्भ किया जावे तो ज्यादा अच्छा होगा।

शैक्षिक उपादेयता :– इस कार्य योजना से कार्य करने का लाभ गणित शिक्षण के सभी टांपिक्स में होगा।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''हिन्दी भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सुगम बनाने के लिए विद्यार्थियों से अधिगम सहायक सामग्री निर्मित करवाने का प्रयास ।''

अनुसंधानकर्ता

श्री सुरेश डूडी, अध्यापक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, जोरावरपुरा, सरदारशहर, चूरू

शोध का शीर्षकः–

रा.बा.उ.प्रा.वि.रेताणा बास भालेरी (तारानगर) में हिन्दी भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सुगम बनाने के लिए विधार्थियों से अधिगम सहायक सामग्री निर्मित करवाने का प्रयास।

1.प्रस्तावनाः–

वर्तमान समय में वही शिक्षक छात्रो के लिए आदर्श होता है और उसी शिक्षक का शिक्षण आदर्श शिक्षण कहलाता है जो अपनी पाठ्यसामग्री को रोचक अधिगम सहायक सामग्री के माध्यम से प्रस्तुत करता है परन्तु मैनं विद्यालय में पाया कि कक्षा–कक्ष में विधार्थी एवं शिक्षक अधिगम सहायक सामग्री का उपयोग नही करते है जिससे विधार्थी अध्ययन–अध्यापन के समय अपेक्षित रूचि नही लेते है। अतः इन समस्याओं के कारण जानने एवं इनके समाधान हेतु यह क्रियात्मक अनुसंधान किया जा रहा है।

2. आवश्यकता व औचित्यः–

इस विषय पर अनुसंधान का महत्व इसलिए है क्योंकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सहायक सामग्री के संबंध में कई नवाचार हुए जिनकी सहायता से अधिगम को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। तथा विधार्थी स्वयं शिक्षक की सहायता से सहायक सामग्री के निर्माण एवं उपयोग करने से सिखे हुए ज्ञान को लम्बे समय तक अपने समृति पटल में संजोय रख सकते है। इसलिए विद्यालय में हिन्दी भाषा शिक्षण की अधिगम सहायक सामग्री के निर्माण की आवश्यकता महसूस हुई है।

3.प्रस्तावित अनुसंधान के उद्देश्यः–

1. विद्यालय में अधिगम सहायक सामग्री के अभाव के कारणों का पता लगाना।
2. कक्षा–कक्ष में अपेक्षित सहायक सामग्री की जानकारी करना
3. विधार्थियों द्वारा निर्मित की जा सकने वाली सहायक सामग्री के निर्माण की संभावनाए खोजना एवं विधार्थियों से निर्माण करवाना।
4. .निर्मित सहायक सामग्री का कक्षा–कक्ष अधिगम प्रक्रिया में उपयोग कर शैक्षिक स्तर प्रोन्नत करना।
5. विधार्थियों मे सृजनात्मक क्षमता एवं समूह में कार्य करने की भावना का विकास करना।

4. समस्या कथनः–

शोधकर्ता द्वारा ली गई समस्या का कथन था 'रा.बा.उ.प्रा.वि.रेताणा बास भालेरी (तारानगर) में हिन्दी भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सुगम बनाने के लिए विधार्थियों से अधिगम सहायक सामग्री निर्मित करवाने का प्रयास।

5. समस्या का क्षैत्र– शैक्षिक

6 सीमांकन – रा.बा.उ.प्रा.वि.रेताणा बास भालेरी (तारानगर) की कक्षा 7 के विधार्थी।

7. संभावित कारण एवं साक्ष्यः–

क्रं.सं	संभावित कारण	साक्ष्य
1	विद्यालय में आवश्यक सहायक सामग्री का अभाव	शिक्षक द्वारा अवलोकन
2	सहायक सामग्री के अभाव में विधार्थियों द्वारा अधिगम में रूचि न लेना	शिक्षक द्वारा अनुभव व विधार्थियों से बातचीत द्वारा
3	सहायक सामग्री की बाजार लागत अधिक होना	शिक्षक द्वारा अनुभव
4	सहायक सामग्री निर्माण में छात्रों एवं शिक्षक की उदासिनता	छात्रों एवं शिक्षक के मध्य बातचीत द्वारा

8. परिकल्पनाः–

प्रथम परिकल्पना :– भाषा शिक्षण को सुलभ बनाने के लिए विधार्थियों से अधिगम सहायक सामग्री निर्मित करवायी जा सकती है।

द्वितिय परिकल्पनाः– निर्मित अधिगम सहायक सामग्री एवं उपलब्ध सहायक सामग्री के उपयोग से अधिगम स्तर का प्रौन्नत किया जा सकता है।

9. न्यादर्शः–

इस क्रियात्मक शोध का न्यादर्श रा.बा.उ.प्रा.वि.रेताणाबास भालेरी (तारानगर) की कक्षा 7 था।

10. उपकरणः–

इस क्रियात्मक शोध के लिए निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरण प्रयुक्त किये गये थे।

1. अवलोकनी
2. प्रश्नावली
3. शिक्षक एवं विधार्थियों के मध्य बातचीत(साक्षात्कार)

11. शोधविधिः–

1. निदानात्मक–उपचारात्मक
2. परीक्षा
3. प्रयोगविधि

12. कार्ययोजना का विकास एवं क्रियान्वयनः–

शोधकर्ता द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान की परिकल्पना के क्रियान्वयन हेतु निम्न कार्य–योजना का निर्माण किया गया।

क्र.सं.	क्रियाएं	क्रियान्वति की विधि	साधन	अवधि
1	हिन्दी भाषा शिक्षण में उपयोग की जा सकने वाली अधिगम सहायक सामग्री के अभाव के कारणों का पता लगाना	सहयोगियों से विचार विमर्श करके कारणों का पता किया	अवलोकन एवं बातचीत द्वारा	आधा दिवस
2	अपेक्षित अधिगम सहायक सामग्री की सूचि तैयार करना	सहयोगियों से विचार विमर्श करके सूचि तैयार की	पाठ्यक्रम एवं विधार्थियों के अधिगम स्तर के अनुसार	आधा दिवस
3	विधार्थियों एवं शिक्षक द्वारा निर्मित की जा सकने वाली सहायक सामग्री का वर्गीकरण एवं चयन करना	शिक्षण अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके एवं विधार्थियों से बातचित करके वर्गीकृत एवं चयन किया	विधार्थियों के स्तर के अनुरूप एवं सूचि	आधा दिवस
4	विधार्थियों द्वारा सामग्री निर्माण हेतु सामग्री की व्यवस्था करना एवं सामग्री निर्माण करना	सहयोगियों एवं छात्रों द्वारा मदद प्राप्त करके	सूचि एवं सामग्री(चार्ट कलर पेन्सिल रब्बर इत्यादि)	आधा दिवस
5	विधार्थियों द्वारा निर्मित अधिगम सामग्री का शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग करना	विधार्थी एवं शिक्षक मिलकर अधिगम सामग्री का उपयोग किया	पाठ्यक्रम एवं अधिगम सहायक सामग्री	4 दिवस
6	विधार्थियों के अधिगम स्तर की प्रगति ज्ञात करना	सहयोगियों की सहायता से प्रश्नपत्र निर्माण एवं परीक्षा का आयोजन करके	वस्तनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र द्वारा	1 दिवस
कुल				7 दिवस

गतिविधिः–

1. सर्वप्रथम शोधकर्ता ने सहयोगियों के माध्यम से समस्या को चिन्हित किया तथा समस्या के कारणों का पता लगाया
2. हिन्दी भाषा शिक्षण में उपयोग की जा सकने वाली अधिगम सहायक सामग्री की सूचि बनायी गई तथा तैयार सूचि से विधार्थियों द्वारा बनाये जाने वाली सहायक सामग्री का चयन किया।
3. सहायक सामग्री के निर्माण हेतु प्रयुक्त किये जानी वाली सामग्री को सहयोगियों की सहायता से उपलब्ध कराया गया।
4. विधार्थियों ने शिक्षक की सहायता से सामग्री निर्माण की यथा विलोम शब्द चार्ट, तद्भव–तत्सम में वर्गीकरण एवं चित्रों के माध्यम से कहानी लेखन हेतु चित्र बनाये गये।
5. निर्मित सहायक सामग्री का उपयोग अधिगम प्रक्रिया में करके विषयवस्तु अवधारणा को समझने का प्रयास किया।
6. अन्त में परीक्षा के माध्यम से बच्चों की प्रगति के स्तर का पता लगाया गया।

13 दत्त संकलनः–

पूर्व जांच

सारणी क्रमांक 1.

क्रं.सं.	श्रेणी	अकांनुसार वर्ग	विधार्थियों की सख्यां	प्रतिशत
1	कमजोर	0–5	6	60
2	औसत	6–10	3	30
3	मेधावी	11–15	1	10
4	**योग**		**10**	**100**

पश्च जांच

सारणी क्रमांक 2

क्रं.सं.	श्रेणी	अकांनुसार वर्ग	विधार्थियों की सख्यां	प्रतिशत
1	कमजोर	0–5	1	10
2	औसत	6–10	4	40
3	मेधावी	11–15	5	50
4	**योग**		**10**	**100**

14. दत्त विश्लेषण :–

प्राप्त आंकड़ो के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि हिन्दी भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिगम सहायक सामग्री निर्माण से विधार्थियों में सृजनात्मक कौशल विकसित हुआ एवं निर्मित सहायक सामग्री का प्रयोग अधिगम प्रक्रिया में करने से विधार्थियों का अधिगम स्तर प्रौन्नत हुआ है। अतः परिकल्पनाओं को स्वीकार किया जाता है।

15. निष्कर्षः–

शोधकर्ता द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान के क्रियान्वयन से स्पष्ट है कि समस्यों का सहयोग पूर्वक समाधान किया जाये जो कम लागत में भी शिक्षण को प्रभावी बनाने वाली अधिगम सहायक सामग्री का निर्माण विद्यालय स्तर पर भी किया जा सकता है। इससे न केवल शिक्षण प्रभावी हुआ अपितु सिखे हुए ज्ञान में स्थाईत्व भी आएगा एवं अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया में कक्षा कक्ष का वातवरण सकारात्मक बनेगा।

16.सुझावः–

1. अध्यापक प्रक्रिया में अध्यापक एवं विधार्थियों में अन्तःक्रियाएं निरंतर होनी चाहिए।
2. अधिगम प्रक्रिया में अधिगम के साथ सृजनात्मक एवं अन्य कौशल का विकास भी होना चाहिए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''कक्षा 8 के विद्यार्थियों हेतु उपचारात्मक शिक्षण स्थितियों की अपेक्षाओं को चिन्हित कर शिक्षण व्यवस्था करने का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

श्री दिलबागसिंह, अ., राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भासीणा, सुजानगढ़, चूरू

शीर्षक :–

''कक्षा 8 के विद्यार्थियों हेतु उपचारात्मक शिक्षण स्थितियों की अपेक्षाओं को चिन्हित कर शिक्षण व्यवस्था करने का प्रयास ''।

शोध का औचित्य/आवश्यकता/समस्या की पृष्ठभूमि :–

हिन्दी शिक्षण के दौरान मैंने पाया है कि विद्यार्थी पाठ पढ़ते समय एवं लिखित गृहकार्य करते समय कई प्रकार की त्रुटियां करते हैं। विद्यार्थियों द्वारा की गई भाषायी अशुद्धियों के शुद्धीकरण हेतु उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता है। उपचारात्मक शिक्षण करके बालकों की मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में अभिवृद्धि करना परमावश्यक है। शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के लिखित गृहकार्य की गहन जांच कर अशुद्धियों को शुद्धियों में परिवर्तित करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण का महत्वपूर्ण योगदान है।

सीमांकन :– कक्षा 8 रा.मा.वि., गेडाप, सुजानगढ़।

शोध उद्देश्य :–

- छात्रों द्वारा की गयी वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का निराकरण करना।
- विराम चिंहों संबंधी त्रुटियों का निराकरण करना।
- छात्रों में लेखन कौशल का विकास करना।

क्षेत्र :– शैक्षिक ।

क्षेत्र :– शैक्षिक ।

शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	छात्रों द्वारा गृहकार्य करते समय लापरवाही करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं का अवलोकन
2.	छात्रों द्वारा गृहकार्य करते समय की गई त्रुटियां।	अवलोकन
3.	त्रुटियां न करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित नहीं करना।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता
4.	छात्रों का विराम चिन्हों से अनभिज्ञ होना।	अवलोकन

क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–

- छात्रों द्वारा किया गया लिखित गृहकार्य जांच गहनता से करते हुए वर्तनी की अशुद्धियों को गोले लगाकर वर्तनी शुद्ध लिखने पर वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हो जायेंगी।
- अध्यापक द्वारा छात्रों की अभ्यास पुस्तिकाओं में विराम चिन्ह संबंधी अशुद्धियों को ठीक करने पर विराम चिन्ह अशुद्धियां कम हो जायेंगी।
- प्रत्येक शनिवार को श्रुतिलेख व सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्रों को प्रार्थना सभा में प्रोत्साहित करने पर छात्रों में लेखन कौशल का विकास हो जायेगा।

उपकरण :– साक्षात्कार, अवलोकन, पूर्व व पश्च परख पत्र, इकाई परख आदि।

क्रियात्मक परिकल्पना का परीक्षण हेतु कार्ययोजना :–

क्र. स.	कार्ययोजना बिन्दू	कार्ययोजना विवरण	उपकरण	समयावधि

1.	वर्तमान स्थिति का आकलन	1. मेरे द्वारा कक्षा 8 के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी विषय में सामान्यतः वर्तनी अशुद्धियां व विराम चिन्ह संबंधी अशुद्धियों की पहचान की। 2. विद्यार्थियों में लेखन कौशल अभाव पाया गया।	उतरपुस्तिका अभ्यास पुस्तिका	1 दिन
2.	पूर्व परीक्षण	मेरे द्वारा विद्यार्थियों को चिन्हित की गयी अशुद्धियों की जांच हेतु पूर्व परख लिया।	पूर्व परीक्षण उतरपत्रक	1 दिन
3.	गतिविधि क्रियान्वयन	1. अभ्यास पुस्तिकाओं की जांच कर वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के गोले लगाकर अनुवर्तन किया गया। 2. अभ्यास पुस्तिकाओं में विराम चिन्ह संबंधी त्रुटियों का निराकरण किया। 3. लेखन कौशल के विकास के लिए श्रुतिलेख व सुलेख लेखन कराया।	अभ्यास पुस्तिका	3 दिन
4.	पश्च परीक्षण	विद्यार्थियों में सुधार की जांच करने हेतु पश्च परख लिया।	पश्च परीक्षण उतरपत्रक	1 दिन

न्यादर्श :–

रा.मा.वि. गेडाप, सुजानगढ़, की कक्षा 8 के 22 विद्यार्थी।

दत संकलन :–

अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर तुलना व वर्गीकरण–

क्र.स.	वर्गीकरण	अंकानुसार	विद्यार्थी	योग
1.	मेधावी	14–20	03	03
2.	औसत	8–12	15	15
3.	कमजोर	2–6	04	04

अनुसंधान पश्चात की स्थिति के आधार पर तुलना व वर्गीकरण–

क्र.स.	वर्गीकरण	अंकानुसार	विद्यार्थी	योग
1.	मेधावी	14–20	03	03
2.	औसत	8–12	15	15
3.	कमजोर	2–6	04	04

निष्कर्ष :–

विद्यार्थियों के लेखन, पठन एवं व्याकरणीय कौशल में काफी सुधार हुआ। विद्यार्थी गृहकार्य में रूचि लेने लगे एवं वर्तमान में वर्तनी व विराम चिन्हों की त्रुटियों में कमी हुई है।

सुझाव :–

सभी विद्यालयों में श्रुतिलेख व सुलेख प्रतियोगिताऐं आयोजित करके अव्वल आने वाले विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा व बालसभा में प्रोत्साहित करके छात्रों में लेखन कौशल का विकास किया जा सकता है एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को भी कम किया जा सकता है। यह कार्य प्रत्येक शनिवार को करना चाहिए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''कक्षा 3 व 5 के छात्रों में विषय वस्तु से संबंधित व अधिगम से ज्ञान में आने वाली बाधाएं में निराकरण प्रयास ।''

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती संतोष राहड़, अ., राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भालेरी, तारानगर, चूरू

शीर्षक :–''कक्षा 3 व 5 के छात्रों में विषय वस्तु से संबंधित व अधिगम से ज्ञान में आने वाली बाधाएं में निराकरण प्रयास ''।

प्रस्तावना :–

वर्तमान समय में राज्य सरकार द्वारा छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने पर बल दिया जा रहा है। छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु छात्र के लिए आवश्यक है। इसी के तहत वर्तमान में सामाजिक विज्ञान व छात्रों के विकासात्मक रूचि पर विशेष ज्ञान दिया गया हैं तथा यह एक महत्वपूर्ण विषय है। इसी के तहत राज्य सरकार द्वारा एनसीईआरटी के नये पाठ्यक्रम में अलग–अलग विषय जोड़े गये है। जिसमें छात्र के विकासात्मक ज्ञान अपना एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रारम्भिक स्तर पर अधिकांश छात्र विषयवस्तु के बारे में कुछ नहीं जानते है। इसलिए बच्चों के स्तर व विषयवस्तु पर आधारित जानकारी के लिए इसके माध्यम से छात्रों में अवलोकन, तुलना, स्थिति, मापन आदि कौशलों का विकास होता है। विषयवस्तु को प्रभावी व रोचक बनाने के लिए शिक्षण व सहायक सामग्री की आवश्यकता होती है। चार्ट सामग्री की सहायता से छात्रों को पेड़–पौधो फलों के बारे में जानकारी दी जाए तो छात्र रूचिपूर्ण रूप से जानकारी दी जाए तो छात्र रूचिपूर्ण रूप से जानकारी लेगे।

शोध की आवश्यकता एवं उपयोगिता :–

इस शोध की आवश्यकता तारानगर तहसील जिला चूरू के रा.उ..मा.वि., भालेरी के कक्षा 3 से 5 के छात्रों में संबंधित दिशा, राज्यों, पेड़–पौधों की जानकारी देने के लिए व विकासात्मक ज्ञान स्तर को बढावा देने के लिए समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रयास किया गया है।

समस्या समाधान :–

कक्षा 3 से 5 तक के छात्रों में विषय से संबंधित दिशा, जिलों व वातावरण संबंधी की जानकारी न होने की समस्या व समाधान।

उद्देश्य :–

- कक्षा 3 से 5 तक छात्रों में बौद्धिक विकास करना।
- छात्रों में शिक्षण स्तर को रूचिपूर्वक बनाने की जानकारी होना।
- शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी बनाना।

क्षेत्र :–

शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित क्रियात्मक परिकल्पनाएं –

- शिक्षक द्वारा कुछ विशेष कार्य आयोजन द्वारा वातावरण शुद्ध व दिशाओं का ज्ञान एबीएल व चार्ट के द्वारा करवाया जा सकता हैं।
- छात्रों को क्रियात्मक, प्रयोगात्मक व अवलोकन ज्ञान की जानकारी देने का प्रयास करेगें।

न्यादर्श :– चूरू जिले का रा.उ.मा.वि., भालेरी की कक्ष 3 से 5 तक छात्रों से संबंधित है।

शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य :–

कारण	साक्ष्य	अध्ययन अनुमान
वनस्पति व जीव–जन्तुओं की जानकारी न होना	कक्षा में शिक्षण कार्य करते समय	कक्षा में छात्रों से वार्तालाप करने पर
विषय संबंधित ज्ञान न होना	पूर्व परख द्वारा	अवलोकन करने पर
वातावरण की जानकारी न होना	वातावरण शुद्ध व अशुद्ध प्रश्न पूछने पर	वार्तालाप करने पर

शोध कार्ययोजना का निर्माण एवं कियान्वयन :–

शोधकर्ता द्वारा रा.उ.मा.वि., भालेरी में कक्षा 3 से 5 के छात्रों में विषय संबंधित ज्ञान को जांचने पर पाया गया कि छात्रों में वातावरण से संबंधित ज्ञान व विषय संबंधित सामान्य जानकारी का अभाव है। छात्र वातावरण, परिवार, वनस्पति के बारे में कुछ नहीं जानते हैं।

क्र.स.	कार्ययोजना	उपकरण	समय
1.	बाहरी वातावरण ज्ञान विभिन्न कार्य की जानकारी देना।	चार्ट, मॉडल बोर्ड पर चित्र	1 दिन
2.	पेड़ पौधो व जीव–जन्तुओं के बारे में बताना।	छोटा पौधा, फूल, पतियां आदि	1 दिन
3.	शब्द ज्ञान करवाना।	एबीएल कार्ड के माध्यम से	2 दिन

बातचीत पर आधारित :–

गतिविधि :– छात्रों को बाहरी वातावरण की जानकारी देने के लिए सुबह की दिनचर्या के बारे मे चच्र करना। विद्यालय प्रांगण में ले जाकर सूर्य की तरफ मुंह करके खड़ा किया व बताया गया यह पूरब दिशा है। इसके बाद बच्चों को खेल–खेल में बाहरी ज्ञान की जानकारी देने के कलए गतिविधि करवाया।

गतिविधि :– छात्रों को कक्षा कक्ष में विभिन्न प्रकार के चार्ट, मॉडल, एबीएल कार्ड द्वारा बताना व इनका वर्गीकरण कर अलग–अलग बताने के लिए कहा गया। फलों का चार्ट व कार्ड फूलों का कार्ड आदि।

गतिविधि :– इस गतिविधि द्वारा कौनसे फल गर्मियों में खाए जाते हैं। इसके लिए अलग–अलग फलों के कार्ड को उपयोग में लेते हुए गतिविधि का आयोजन किया गया है।

अनुसंधान कियात्मक शोध के पश्चात प्राप्त परिणाम :–

परिणाम व अनुभव के आधार पर कहा जाता है कि प्रत्येक बच्चें में सीखने की जिज्ञासा होती है अगर उसे गतिविधि आधारित शिक्षण करवाया जाए एवं अध्यापक द्वारा शिक्षण कार्य को रूचिकर बनाया जाएं। बच्चों द्वारा बाहरी वातावरण से संबंधित सामान्य ज्ञान पेड़–पौधो, जीव–जन्तुओं, स्वस्थ स्वास्थ्य की जानकारी आदि को गतिविधियों व रोचक ढंग से पढाया जाये।

पूर्व परीक्षण

क्र. स.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक	वि.वि.
1.	उतरा स्वामी	20	10	
2.	मुस्तफा	20	11	
3.	मो. इमरान	20	11	
4.	समीर खान	20	7	
5.	यास्मिन	20	6	
6.	सुफियान	20	8	
7.	सुहाना	20	6	
8.	शबनम	20	8	
9.	साहिबा	20	10	
10.	कंचन	20	12	

पश्च परीक्षण

क्र.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक	वि.वि.

स.				
1.	उतरा स्वामी	20	20	
2.	मुस्तफा	20	18	
3.	मो. इमरान	20	18	
4.	समीर खान	20	17	
5.	यास्मिन	20	13	
6.	सुफियान	20	14	
7.	सुहाना	20	12	
8.	शबनम	20	16	
9.	साहिबा	20	13	
10.	कंचन	20	20	

सुझाव :–

क्रियात्मक अनुसंधान की स्थिति परिणाम व अनुभव के आधार पर स्पष्ट है कि परिकल्पना के रूप में प्रयुक्त सुझावों को लागू करने पर छात्रों द्वारा की जाने वाली क्रियाएं प्रभावित हुई। गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य करवाया जाये एवं अध्यापक द्वारा शिक्षण कार्य रूचिकर बनाया जाए। सहायक सामग्री से बच्चों में सीखने का उत्साह पैदा होता है। शोधकर्ता द्वारा क्रियात्मक शोध के क्रियान्वयन से स्पष्ट है कि सीखने की समस्याओं को दूर किया जाता है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''प्राथमिक स्तर विद्यार्थियों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में वास्तविक अधिगम परिस्थितियों प्रोन्नति द्वारा अधिगम स्थिति को प्रोन्नति करना।''

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती अनिता सोनी, व्याख्याता, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, ढाणी कुम्हारान, बीदासऱ, चूरू

शीर्षक :–

''प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में वास्तविक अधिगम परिस्थितियों प्रोन्नति द्वारा अधिगम स्थिति को प्रोन्नति करना। ''।

पृष्ठभूमि/औचित्य :–

शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों को वास्तविक अधिगम के लिये उपयुक्त परिस्थितियां प्रदत होती है। परन्तु वास्तविकता में यह स्थिति सोचनीय है। और इसका परिणाम यह स्पष्ट करता है कि हम किसी मेधावी बुद्धि के शिक्षार्थी का जिक्र करते हैं तो सोचते है कि मेधावी ने सर्वोच्च अंक प्राप्त किये है प्रखर बुद्धि या मेधावी होने का तात्पर्य है कि शिक्षार्थी को जीवन जीने का तरीका, समस्याओं के समाधान का तरीका इस तरह के प्रयास होना है। वास्तविकता में मेधावी छात्र समस्या समाधान के सुझाव प्रस्तुत करते हैं जबकि वह समस्या समाधान करने में सक्षम होता है। हमें यह भी ज्ञात है कि प्रारंभिक स्तर पर शिक्षार्थी मात्र ज्ञान का ही अर्जन करता है।

शोध उद्देश्य :–

प्रारंभिक शिक्षा में वास्तविक अधिगम स्थितियां प्रोन्नत कर अधिगम सुनिश्चित करने के लिये अधोलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया–

- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में वास्तविक अधिगम स्तर की जांच करना।
- वास्तविक अधिगम स्तर पर प्रोन्नति के लिए अपेक्षित परिस्थितियों की पहचान करना।
- वास्तविक अधिगम स्तर परिस्थितियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रोन्नति के प्रयास करना।

परिकल्पना :–

अधिगम प्रोन्नति के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन कर परिस्थितियां प्रदान कर अधिगम स्तर प्रोन्नति के संबंध में अपनी पूर्ण धारणाएं निश्चित की वो निम्न है–

- प्राथमिक स्तर में अधिगम प्रक्रिया वास्तविक अधिगम स्थिति प्रोन्नत करने के लिए कार्य करने का प्रयास करना।
- अधिगम परिस्थितियों को शिक्षक द्वारा निर्धारित कर शिक्षार्थी को वास्तव में अधिगम की स्थितियों में अनुभव स्तर को प्रोन्नत किया जा सकता है।

क्षेत्र :– शैक्षिक।

शोध विधि :– क्रियात्मक अनुसंधान हेतु प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श :– यह अनुसंधान कार्य रा.उ.मा.वि., ढाणी कुम्हारान, बीदासर में किया गया।

शोध उपकरण :–

समस्या समाधान के लिये क्रियात्मक शोधकार्य में समस्या से संबंधित कारण समस्या से संबंधित तथ्य संकलन के लिये मेरे द्वारा प्रश्नावली का सहयोग अधिगम स्तर प्रोन्नति के लिये अपेक्षित कार्य हेतु निर्धारण किया गया। उक्त उपकरण के प्रयोग से अन्वेषण कार्य में प्राप्त दतों का संकलन कर इनके आधार पर अंकन एवं सारणीयन किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी :–

अन्वेषण कार्य के लिये परिकल्पना परीक्षण हेतु दत संकलनों से मध्य मानक का उपयोग किया गया। प्रश्नावली का प्रयोग कर पूर्व व अपेक्षित कार्य पश्चात पश्च पूष्टिपूर्ण प्राप्ति की गई।

दत संकलन प्रक्रिया :–

संकलित दतो की स्थिति पूर्व व पश्च परीक्षण मात्र अध्येता अधिगम स्थितियां प्रोन्नति प्रयास प्रदशित अधोलिखितानुसार रही है। इसके द्वारा अध्येता के अधिगम स्तर को ज्ञात किया गया।

अधिगम की स्थिति–

क्र.स.	वर्ग	पूर्व परीक्षण	पश्च परीक्षण
1.	0–5	7	9
2.	5–10	10	14
3.	10–15	9	16
4.	15–20	4	22
5.	20–25	7	24
6.	25–30	5	20
7.	30–35	2	18
8.	35–40	4	26
9.	40–45	6	23
	योग	54	172

पूर्व परीक्षण –

क्र.स.	वर्ग अन्तराल	x	बारम्बारता	fx
1.	0–5	2.5	7	17.5
2.	5–10	7.5	10	75
3.	10–15	12.5	9	112.5
4.	15–20	17.5	4	70
5.	20–25	22.5	7	157.5
6.	25–30	27.5	5	137.5
7.	30–35	32.5	2	65
8.	35–40	37.5	4	150
9.	40–45	42.5	6	255
	योग		54	1040

x= 1040/54=19.2

पश्च परीक्षण

क्र.स.	वर्ग अन्तराल	बारम्बारता	*x	fx
1.	0–5	9	2.5	22.5
2.	5–10	14	7.5	105
3.	10–15	16	12.5	200

4.	15–20	22	17.5	385
5.	20–25	24	22.5	540
6.	25–30	20	27.5	550
7.	30–35	18	32.5	585
8.	35–40	26	37.5	975
9.	40–45	23	42.5	977.5
	योग	172		4340

4340/172=25.23

दत विश्लेषण :–

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिगम स्थितियों में अधिगम प्रक्रिया द्वारा परिवर्तन संभव है यह परिवर्तन शिक्षक की संज्ञानात्मक स्पष्टता के आधार पर किया गया है। एवं इस की पूष्टि अध्येता के अधिगम स्तर पर परिवर्तन को प्रमाणित करने के लिये उपलब्धि की परीक्षा पूर्व परीक्षण द्वारा प्राप्त की गई है। इसे उपरोक्त तालिका द्वारा किया गया। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्येता की उपलब्धि में परिवर्तन सार्थक है।

निष्कर्ष :–

क्रियात्मक शोधकार्य पश्चात यह स्पष्ट होता है कि सार्थकता का स्तर पर सार्थक है। और यह स्पष्ट होता है कि क्रियात्मक कार्य से अधिगम प्रक्रिया से वास्तविक अधिगम स्थिति परिवर्तित की जा सकती है। चूंकि उपलब्धि की जांच तुरन्त की गई अतः उपलब्धि की वस्तु स्थिति यह रही कि अध्येता द्वारा यह कहा गया कि मुझे समय या मार्गदर्शन पूनः मिलें तो मेरी यह उपलब्धि की स्थिति में और अधिक प्रोन्नति कर सकता हूं।

सुझाव :–

अध्यापन प्रक्रिया के समय अध्येता द्वारा किया जाने वाला व्यवहार के समझा की क्षमता पैदा करनी चाहिए। अध्यापन प्रक्रिया छात्र की आवश्यकता के अनुकुल होनी चाहिए। शिक्षक द्वारा अध्येता का उपरोक्ष रूप से सुक्ष्म अवलोकन करना चाहिए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों में अवलोकन क्षमता विकास का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती सुप्रिया, अ., राजकीय प्राथमिक विद्यालय, चक दड़ीबा, ढ़ढ़ेरू भामूवान, बीदासर, चूरू

शीर्षक :–

''प्राथमिक में अवलोकन क्षमता विकास का प्रयास।''

प्रस्तावना :–

प्रायः यह देखा जाता है कि देखा हुआ ज्ञान ज्यादा स्थायी व रूचिकर होता है। विद्यालय में भ्रमण अवलोकन आदि के द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान कराया जाता है जिससे विद्यार्थी उस ज्ञान को मूर्त रूप में देखकर उसकी तुलना करके उसे ग्रहण करता हैं। अवलोकन में बच्चें सक्रिय रहकर सीखते हैं जिससे शिक्षण रूचिकर व स्थायी होता है। अतः बच्चों में अवलोकन क्षमता का विकास कैसे किया जाये इसके शोध/आकलन की आवश्यकता है।

समस्या सीमांकन :–

अनुसंधान रा.प्रा.वि., चक दड़ीबा की कक्षा–5 के सभी विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध उद्देश्य :–

- विद्यार्थियों में अवलोकन की क्षमता का विकास करना।
- अवलोकन द्वारा शिक्षण को रूचिकर बनाना।
- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर अवलोकन द्वारा सीखने का प्रभाव ज्ञात करना।

क्षेत्र :– अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया शोध शैक्षणिक विषय के अन्तर्गत आता है।

विधि :– अवलोकन विधि, भ्रमण विधि।

समस्या के कारण व साक्ष्य :–

समस्या के कारण	साक्ष्य
छात्रों का अवलोकन के प्रति उदासीन होना	कक्षागत व्यवहार
विद्यार्थियों के अभिभावकों का अपने बच्चों को भ्रमण पर भेजने से इनकार करना।	कक्षाध्यापक से वार्तालाप
विद्यालय में शैक्षिक सहशैक्षिक साधनों का अभाव।	विद्यालय रिकॉर्ड
विद्यार्थियों का अवलोकन के पश्चात देखी गई बात को व्यवहार में न लाना।	विषयाध्यापक से वार्तालाप

परिकल्पना :–

समस्या के समाधान हेतू मन में ऐसे विचार आए जिन्हे क्रियान्वित कर हम उपरोक्त समस्या का समाधान कर सकें। यदि विद्यालय में मॉडल,चार्ट आदि का अवलोकन योग्य सामग्री हों एवं अभिभावक, शिक्षक, छात्रों में अवलोकन क्षमता का विकास होगा। विद्यालय में आवश्यक सहायक सामग्री उपलब्ध कराकर विद्यार्थियों से उसका अधिकतम उपयोग कराया जाये। विद्यार्थियों को ग्रम पंचायत, अस्पताल, नर्सरी, कारखाना एवं अन्य की जानकारी देने से पहले जहां तक हो सकेगा इनका प्रत्यक्ष भ्रमण कराकर अवलोकन कराया जाये जिससे बच्चें इन्हें प्रत्यक्षतः देखकर इनकी कार्यप्रणाली को समझ सकें। जिन स्थानों या वस्तुओं का प्रत्यक्षतः अवलोकन संभव नही हों उन्हें मोबाईल द्वारा दिखाया जाये तो बच्चों में अवलोकन क्षमता का विकास किया जा सकता है।

क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतू कार्ययोजना :–

कार्ययोजना के बिन्दू	कार्य जो करना है	साधन/उपकरण	समय

1. विद्यालय में उपलब्ध उपकरणों की लिस्ट बनाना व उन्हें सुचारू रूप से व्यवस्थित करना।	उपकरणों सहायक सामग्री को सही ढंग से व्यवस्थित करना	विद्यालय स्टॉक रजिस्टर	2 दिन
2. कक्षाध्यापक से सम्पर्क	पिछले शैक्षिक भ्रमणों की जानकारी लेना व उनका बच्चों पर प्रभाव ज्ञात करना।	कक्षाध्यापक से वार्तालाप	1 दिन
3. अभिभावकों से सम्पर्क	अभिभावक से चर्चा करना कि वे छात्रों को भ्रमण पर भेजने से मना क्यों करते हैं?	पीटीएम व एसडीएमसी बैठक में	2 दिन
4. विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष अवलोकन का अवसर देना	अवलोकन के दौरान विद्यार्थियों पर नजर रखना और उनकी क्रियाओं को देखना।	मोबाईल, दर्शनीय स्थल।	2 दिन

दत संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर :–

क्र.स.	अंकानुसार	छात्र/छात्रा	योग
1.	7–10	1	1
2.	4–6	4	4
3.	1–3	1	1

दतसंकलन अनुसंधान पश्चात की स्थिती के आधार पर –

क्र.स.	अंकानुसार	छात्र/छात्रा	योग
1.	7–10	1	1
2.	4–6	4	4
3.	1–3	1	1

दत विश्लेषण :–

- पर्यावरण अध्ययन विषय पढ़ाते समय बच्चों को विषय–वस्तु से संबंधित चित्र जब मोबाईल से दिखाए गए तो बच्चें रूचिपूर्ण रूप से सीख गए।
- अंग्रेजी विषय की कविता को बच्चों को मोबाईल पर दिखाकर सुनाया गया तो बच्चें उसे रूचि से लय–ताल में गाना सीख गये।
- बच्चों को ग्रम पंचायत, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, चौपाल आदि का अवलोकन करवाया गया तो उन्होंने उन्हें उत्साहपूर्वक देखा और जानकारी प्राप्त की।

निष्कर्ष :–

शोध के उपरान्त यह स्पष्ट होता है कि ज्ञान को रूचिकर स्पष्ट व स्थायी बनाने के लिए अवलोकन क्षमता का विकास आवश्यक है अवलोकन से ज्ञान रूचिकर होता है। अवलोकन से शिक्षण मनोरंजक और आनन्ददायी होता है एवं अवलोकन से प्राप्त किया गया ज्ञान स्थायी होता है।

सुझाव :–

विद्यार्थियों में संचार साधनों एवं निरंतर अवलोकन से अवलोकन क्षमता का विकास किया जाना चाहिए। छात्रों को समय–समय पर अवलोकन के अवसर मिलने चाहिए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''रा.बा.उ.प्रा.वि., घण्टेल के कक्षा 6 की छात्राओं मे स्वाध्याय का अभाव एक अध्ययन।''

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती अंजना चौधरी, अ., राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, घण्टेल, चूरू

शोध शीर्षकः– रा. बा. उ. प्रा. वि. घण्टेल के कक्षा–6 की छात्राओं में स्वाध्याय का अभाव एक अध्ययन।

1 प्रस्तावनाः– विधार्थियों में शैक्षिक उन्नयन के लगातारसय प्रयास होते रहने पर भी अपेक्षित लाभ नहीं हो रहा है। आध्यात्मिक दृष्टि से स्वाध्याय के द्वारा व्यक्ति अथवा साधक स्वयं के सूक्ष्म चिन्तन एवं तद्नुरूप मनन से अपने आप बौद्धिक स्तर को बढाकर आत्म चिन्तन की पराकाष्ठा को प्राप्त कर सकने की ओर अग्रसर हो सकता है। शिक्षक के लिए स्वाध्याय का तात्पर्य कक्षा में अध्यापन हेतु सम्बन्धित विषय पर पूर्व चिन्तन व मनन कर अपने आपको छात्रों के समक्ष सम्बन्धित विषय के लिए तैयार एवं प्रस्तुत करने की पूर्व तैयारी है। छात्रों के लिए स्वाध्याय पठित एवं अपठित पाठों के सम्बन्ध में स्वयं द्वारा पठन एवं चिन्तन होता है। जिनके द्वारा वह जटिल विषय को भी हदगंम कर सकने में पूर्णतः सफल हो जाता है।

स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ है– स्वयं का अध्ययन करना ।अंत में हम कह सकते हैं कि स्वाध्याय का जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। स्वाध्याय से व्यक्ति का जीवन, व्यवहार, सोच और स्वभाव बदलने लगता है।

2 शोध का औचित्य :–विद्यार्थियों के स्वाध्याय में व्यवधान एवं अरूचि उत्पन्न कर रहे कार्यों को किस प्रकार दूर किया जा सके, प्रस्तुत क्रियात्मक शोध में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है, ताकि विद्यार्थी अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

3 शोध के उद्देश्यः–

1 स्वाध्याय का महत्व बताना।

2 स्वाध्याय की ओर छात्राओं को अग्रसर करना।

3 रा. बा. उ. प्रा. वि. घण्टेल की कक्षा–6 की छात्राओं में स्वाध्याय की कमी के करणों का पता लगाना।

4 शोध की परिकल्पनाः– शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में स्वाध्याय की प्रवृति प्रायः कम रहती है।

5 सीमांकनः– प्रस्तुत शोध चूरू जिले के ग्राम घण्टेल के रा. बा. उ. प्रा. वि. तक सीमित है।

6 न्यादर्शः– प्रस्तुत शोध में राजकीय बा. उ. प्रा. वि. घण्टेल की कक्षा–6 की 10 छात्राओं तथा चार विषयाध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

7 उपकरणः– स्वयं निर्मित प्रश्नावली

1 छात्रों के लिए

2 स्वयं के लिए

8 शोध विधिः– सर्वेक्षण प्रश्नावली के माध्यम से।

9 सांख्यिकीः– प्रस्तुत शोध में प्रतिशत का उपयोग किया गया है।

10 दत संकलन एवं सारणीकरणः–

न्यादर्श के अनुसार लिए गए कक्षा–6 के 10 विद्यार्थी एवं विषयाध्यापकों हेतु ली गई प्रश्नावली द्वारा प्राप्त दत संकलन निम्नलिखित विश्लेषण तालिका में संकलित है

उपकरण–01 (विश्लेषण तालिका–01)

(प्रश्नावली विद्यार्थी हेतु)

क्र. सं.	कथन	प्राप्त अभिमत		प्रतिशत	
		हां	नहीं	हां	नहीं
1	क्या आप नियमित विद्यालय आते है	7	3	70	30
2	क्या आपको गृहकार्य दिया जाता है	10	–	100	–
3	क्या आपका गृहकार्य नियमित जांचा जाता है	10	–	100	–
4	क्या आप गृहकार्य नियमित करते है	8	2	80	20
5	क्या आप घर पर नियमित पढाई करते है	7	3	70	30
6	क्या आपको प्रश्न उतर याद रह जाते है	6	4	60	40
7	क्या आप प्रश्नों को रटते है	9	1	90	10
8	क्या कक्षा में अध्यापक द्वारा पढाया याद रहता है	6	4	60	40
9	क्या आप विद्यालय की पढाई से संतुष्ट है	10	–	100	–
10	क्या आप स्वयं पढने में बाधा महसूस करते है	5	5	50	50

उपकरण–02 (विश्लेषण तालिका–02)

(प्रश्नावली शिक्षक हेतु)

क्र. सं.	कथन	प्राप्त अभिमत		प्रतिशत	
		हां	नहीं	हां	नहीं
1	क्या आप शिक्षण कराने से पूर्व स्वाध्याय करते है	04	–	100	–
2	क्या शिक्षण के समय विद्यार्थी रूचि लेते है	04	–	100	–

3	क्या आप नियमित कक्षा में शिक्षण कार्य करवाते है	04	—	100	—
4	क्या आप बच्चों को स्वाध्याय के लिए प्ररित करते है	04	—	100	—
5	क्या आप नियमित गृहकार्य देते है	04	—	100	—
6	क्या विद्यार्थी नियमित गृहकार्य करके लाते है	02	02	50	50
7	क्या विद्यार्थी पूछे गए प्रश्नों के उतर देते है	03	01	75	25
8	क्या विद्यार्थियों को दिए गए प्रश्न याद रह जाते है	01	03	25	75
9	क्या भौतिक सुविधाएं स्वाध्याय को प्रभावित करती है	02	02	50	50
10	क्या घरेलू कार्य छात्रों के स्वाध्याय में बाधक है	02	02	50	50

11 दत विश्लेषण एवं व्याख्याः— विद्यार्थी प्रश्नावली के आधार पर

तालिका 01 के अवलोकन के आधार पर कक्षा—6 की 70 प्रतिशत छात्राएं नियमित विद्यालय आती है। शत प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि उनको गृहकार्य दिया जाता है तथा समय पर जांचा भी जाता है 80 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि वे घर पर नियमित पढाई करती है।
70 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि वे घर पर नियमित पढाई करती है।
60 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि उनको प्रश्न उतर याद रहते है।
90 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि वे प्रश्नों को रटती है।
60 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि उनको कक्षा में अध्यापक द्वारा पढाया याद रहता है।
शत प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि वे विद्यालय की पढाई से संतुष्ट है।
50 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि वे स्वयं पढने में कठिनाई महसूस करती है।
दत विश्लेषण एवं व्याख्या (शिक्षक प्रश्नावली के आधार पर)
शत प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि वे शिक्षण कराने से पूर्व स्वाध्याय करते है।
शत प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि जब वे शिक्षण कराते हैं तो विद्यार्थी रूचि लेते है।
शत प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि वे नियमित कक्षा में शिक्षण कार्य करवाते है।
शत प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि वे बच्चों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करते है तथा नियमित गृहकार्य देते है।
50 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि वे विद्यार्थी नियमित गृहकार्य करके लाते है
75 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थी पूछे गए प्रश्नों के उतर देते है।
25 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थियों को दिए गए प्रश्न याद रहते है।
50 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि भौतिक सुविधाएं स्वाध्याय को प्रभावित करती है।

50 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि छात्राओं का घरेलू कार्य करना स्वाध्याय में बाधक है।
12 निष्कर्षः– प्राप्त आंकड़ों व अभिमतों के अनुसार विद्यार्थियों में स्वाध्याय के प्रति सकारात्मक पक्ष उभर कर आया है फिर भी छात्राओं में स्वाध्याय में वृद्धि हेतु घरेलू वातावरण का प्रभाव पड़ता है। घरेलू कार्यों की अधिकता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी छात्राओं को पढने का सम्पूर्ण समय नहीं मिल पाता है।

यदि घरेलू कार्यों की अधिकता तथा अभिभावकों की लड़कियों की शिक्षा को लेकर लापरवाही ना हो तो छात्राओं के शैक्षिक विकास में गुणात्मक सुधार हो सकता है।

13 सुझावः– शिक्षण में ज्ञान, कौशल व विकास हेतु चिंतन, मनन व प्रयास आवश्यक है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''कक्षा 5 के विद्यार्थियों हेतु उपचारात्मक शिक्षण स्थितियों की अपेक्षाओं को चिन्हित कर शिक्षण व्यवस्था करने का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

श्री प्रवीण कुमार मीणा, अ., राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भासीणा, सुजानगढ़, चूरू

शीर्षक :–

''कक्षा 5 के विद्यार्थियों हेतु उपचारात्मक शिक्षण स्थितियों की अपेक्षाओं को चिन्हित कर शिक्षण व्यवस्था करने का प्रयास।''

शोध का औचित्य/आवश्यकता/समस्या की पृष्ठभूमि :–

हिन्दी शिक्षण के दौरान मैने कक्षा 5 में पाया कि विद्यार्थी पाठ पढ़ते समय एवं कक्षा कार्य करते समय कई प्रकारी की त्रुटियां करते हैं। विद्यार्थियों द्वारा की गई भाषायी अशुद्धियों के शुद्धिकरण हेतु उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के अधिगम में गुणवता लाने हेतु क्रियात्म्क शोध संपादित करने की आवश्यकता अनुभव की गई।

समस्या सीमांकन :–

कक्षा–5 रा.उ.मा.वि., भासीणा सुजानगढ़।

शोध उद्देश्य :–

- विद्यार्थियों को वर्तनी संबंधी त्रुटियों से अवगत कराता व उनका निराकरण करना।
- विद्यार्थियों में लेखन कौशल का विकास करना।
- संयुक्ताक्षर को पहचानने की समझ विकसित करना।

क्षेत्र :– अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया शोध शैक्षणिक विषय के अन्तर्गत आता है।

समस्या के कारण व साक्ष्य :–

समस्या के कारण	साक्ष्य
छात्रों द्वारा गृहकार्य करते समय की गई त्रुटियां	अभ्यास पुस्तिका
छात्रों द्वारा गृहकार्य करते समय लापरवाही	अभ्यास पुस्तिका अवलोकन
जब कक्षा में छात्रों से पाठ का पठन करवा रहा था तो संयुक्ताक्षर पहचानने में कठिनाई अनुभव कर रहे थे।	अवलोकन

परिकल्पना :–

- छात्रों द्वारा किया गया लिखित गृहकार्य जांच गहनता से करते हुए वर्तनी की अशुद्धियों को गोले लगाकर वर्तनी शुद्ध लिखने पर वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हो सकेंगी।
- समय–समय पर श्रुतिलेख व सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्रों को प्रार्थना सभा में प्रोत्साहित करने पर छात्रों में लेखन कौशल का विकास हो सकेगा।
- संयुक्ताक्षर से बने शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर संयुक्ताक्षर की पहचान कराने से छात्रों में संयुक्ताक्षर को पहचानने की समझ विकसित की जाएगी।

क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतू कार्ययोजना :–

कार्ययोजना के बिन्दू	कार्ययोजना विवरण	साधन/उपकरण	समय

वर्तमान स्थिति का अवलोकन	1. मेरे द्वारा कक्षा 5 के छात्रों द्वारा हिन्दी विषय में सामान्यतः वर्तनी संबंधी पहचान की । 2. छात्रों में लेखन कौशल का अभाव पाया गया	उत्तर पुस्तिका अभ्यास पुस्तिका	1 दिन
पूर्व परीक्षण	मेरे द्वारा छात्रों को चिन्हित की गयी अशुद्धियों की जांच हेतु पूर्व परख लिया	पूर्व परीक्षण उत्तर पत्रक	1 दिन
गतिविधि क्रियान्वयन	1. अभ्यास पुस्तिकाओं की जांच कर वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के गोले लगाकर अनुवर्तन किया गया। 2. लेखन कौशल के विकास के लिए श्रुतिलेख व सुलेख लेखन कराया	अभ्यास पुस्तिका	3 दिन
पश्च परीक्षण	छात्रों में सुधार की जांच करने हेतु पश्च परख लिया।	पश्च परीक्षण उत्तर पत्रक	1 दिन

न्यादर्श :– रा.उ.मा.वि., भासीणा, सुजानगढ़ की कक्षा 5 के 21 विद्यार्थी।
अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर तुलना व वर्गीकरण :–

वर्गीकरण	अंकानुसार	विद्यार्थी	योग
मेधावी	14–20	5	5
औसत	8–12	12	12
कमजोर	2–6	4	4

अनुसंधान पश्चात की स्थिती के आधार पर तुलना व वर्गीकरण –

क्र.स.	अंकानुसार	विद्यार्थी	योग
मेधावी	14–20	10	10
औसत	8–12	8	8
कमजोर	2–6	3	3

निष्कर्ष :–

विद्यार्थियों की वर्तनी संबंधी त्रुटियों में व्यापक सुधार हुआ। विद्यार्थी लेखन कौशल में पारांगत हुए। संयुक्ताक्षर को पहचानने की समझ विकसित हुई।

सुझाव :–

विद्यालय स्तर पर श्रुतिलेख व सुलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन कर छात्रों को प्रोत्साहित किया जावे।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''प्राथमिक कक्षाओं में आधारभूत अंकज्ञान दक्षताओं हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण की उपादेयता ज्ञात करना।''

अनुसंधानकर्ता

श्री विजय कुमार आर्य, व्याख्याता, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, थिरपाली बड़ी, राजगढ़, चूरू

1. शीर्षक :–

''प्राथमिक कक्षाओं में आधारभूत अंकज्ञान दक्षताओं हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण की उपादेयता ज्ञात करना।''

2. शोध प्रस्तावना :–

नई शिक्षा नीति 2020 में आधारभूत साक्षरता एवं संख्यां ज्ञान की सार्वजनिक प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गतिविधि आधारित अधिगम द्वारा कक्षा कक्षीय प्रक्रिया को रचनात्मक एवं नवीन शिक्षण विधा से शिक्षण कार्य किया जा रहा है। ज्यादातर विद्यालयों में शिक्षण परम्परागत विधियों द्वारा करवाया जा रहा है जो अंकज्ञान समझ की अपेक्षा गिनती, पहाड़ा रटन्त विधियों पर आश्रित हैं। बोझिल पाठ्यपुस्तक पर निर्भरता अधिक है तथा गतिविधियों का समावेश न्यून है, जिससे सुसंगत परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे हैं। सीखने की सहज तथा स्वाभाविक परिस्थितियों को उत्पन्न करने के लिए बाल सुलभ गतिविधियों का सर्जन शिक्षकों को करना पड़ता है, जिससे आनंददायी शिक्षण किया जा सके तथा बालकों में अंक ज्ञान विषयक स्थाई समझ का विकास हो सके। आधारभूत संख्या ज्ञान के साक्ष्य आदिम मानव सभ्यताओं में मिलते हैं, जिनमें भौतिक वस्तुओं तथा प्रतीकों द्वारा संख्याओं का निरूपण, क्रमबद्धता, व्यवस्थापन किया गया है। मानव की तुलना करने की मूल प्रवृति ने अंकज्ञान को प्रतीकों में परिवर्तित किया है। प्रस्तुत शोध में उन गतिविधियों का उपयोग किया गया है जिससे सीखने की प्रक्रिया सुगम हो सके तथा संख्यां ज्ञान सीखने में इनकी उपादेयता अवगत हो सके।

3. अनुसंधान का औचित्य :–

साधारणतया प्राथमिक कक्षाओं में आधारभूत संख्या ज्ञान प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है अर्थात आधारभूत गणित में पारंगतता, निपुणता तथा गुणवता की समस्या विद्यमान रहती है। अधिकांश विद्यार्थियों में गणित विषयक मिथ्याभय पाया जाता है जिससे वे गणित विषय में बेहिचक, आत्मविश्वास के साथ उत्तर नहीं दे पाते हैं तथा गणित संक्रियाओं में असफल हो जाते हैं अतः क्यों न इस बोझिल प्रक्रिया को गतिविधियों का समावेश शिक्षण प्रक्रिया में करके शिक्षण को सुगम बनाया जाये? अतः इस क्षेत्र में शोध किया जाए जो बहुविध गतिविधियों की खोज होती है तथा आधारभूत संख्यां ज्ञान सीखने में इनकी उपादेयता का पता चलता है।

4. शोध उद्देश्य :–

I. आधारभूत अंक ज्ञान दक्षताओं में अध्येता की अधिगम मात्रा में वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
II. आधारभूत अंकज्ञान दक्षता प्राप्ति में तथा प्रोन्नति में बाधक तत्वों की जानकारी करना।
III. आधारभूत अंकज्ञान दक्षताओं की प्राप्ति में गतिविधि आधारित शिक्षण की उपादेयता ज्ञात करना।

5. विद्यालय के लिए योजना का महत्व :–

वर्तमान में एस.आई.क्यू.ई. चैकलिस्ट तथा वर्कबुक जांच से अवगत हुआ कि विद्यार्थी आधारभूत अंकज्ञान से पिछड़े हुए हैं। गतिविधियों तथा प्रायोगिक क्रियाविधियों के प्रयोग से ये सरलता से आधारभूत संख्याज्ञान सीख सकेगें तथा गणना विषयक दक्षताओं मे निपुणता प्राप्त कर रहे हैं।

6. समस्या का अवलोकन :–

प्राथमिक कक्षाओं में संख्या ज्ञान एक मुख्य समस्या है, बालक गणना, विश्लेषण, गणितीय संक्रियाओं से बचना चाहते है तथा मिथ्याभ्रम पाले हुए हैं कि मैं इन दक्षताओं को प्राप्त नहीं कर सकता।

7. समस्या का सीमांकन तथा परिभाषीकरण :–

उक्त समस्या प्राथमिक कक्षाओं तक ही सीमित है तथा इसके अध्ययन हेतु रा.उ.मा.वि., थिरपाली बड़ी के कक्षा एक से पांच तक के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इन हेतु चयनित आधारभूत अंकज्ञान, गिनती, व्युत्क्रम गिनती, अंक क्रमबद्धता, इकाई–दहाई–सैंकड़ा–हजार स्थानीय मान, सरल भिन्न, शुन्य की अवधारणा, अंक प्रतीक चिन्ह, शब्द–अंक रूपान्तरण, योग–बाकी–गुणन–भाजन संक्रियायें आधारभूत गणित संज्ञान के अन्तर्गत सम्मिलित किये गए हैं।

8. समस्या के लिए साक्षियां :–

प्राथमिक कक्षा के पोर्टफोलियों, एस.आई.क्यू.ई. चैक लिस्ट में उपलब्धि परीक्षण, मौखिक–लिखित आधारभूत संख्याज्ञान विषयक जांच, वर्कबुक निरीक्षण, बालकों को दी गई गणितीय चुनौतियों, प्रायोगिक कार्य, समस्याओं को हल करने की क्षमता का अवलोकन प्रयोगकर्ता शिक्षक द्वारा किया गया हैं।

9. समस्या के कारणों का विश्लेषण :–

समस्या के मुख्य कारण गणित विषयक पूर्वाग्रह है, जिसके अन्तर्गत उपरोक्त विषय को कलिष्ठ समझा जाता है जिससे भयभीत होने के कारण बालकों में सीखने की प्रक्रिया अवरूद्ध हो जाती है। शिक्षकों के द्वारा आधारभूत संख्याज्ञान को परम्परागत पद्धतियों जैसे गिनती बुलवाना, पहाड़े रटवाना, संख्या लेखन इत्यादि के द्वारा किया जाता है जो अवैज्ञानिक, तारतम्यता रहित, अतार्किक, बालमनोविज्ञान विरूद्ध है। शिक्षकों द्वारा गतिविधियों, उदाहरणों, स्वयं करके सीखना, समस्या समाधान प्रोजेक्ट कार्य, आनंददायी शिक्षण पर जोर नहीं दिया जाता है तथा शिक्षक की भूमिका विद्यार्थी मित्र न होकर प्रबलता लिए हुए निरीक्षक की होती है जिससे बालक जिज्ञासाओं को दबा लेते हैं तथा प्रश्न पूछने से कतराते हैं। भययुक्त निरस वातावरण में सीखने की डांट–डपट,झिड़कने और दण्डवंचना के लिए सीखने का दिखावा करते हैं। दिया गया गृहकार्य अन्य के सहयोग से अथवा नकल करके कर लिया जाता है। ज्यादातर शिक्षक एबस्कस, एबीएल किट, ज्यामिति बक्स तथा गोली, कंकड़, भौतिक ठोस सामग्री का प्रयोग न करके श्यामपट्ट तथा पाठ्यपुस्तक पर ही ध्यान केन्द्रित रखते हैं जिससे बालकों की तार्किकता और समझ अवबाधित हो जाती है तथा गुणवतापूर्ण अधिगम संभव नहीं हो पाता है।

विशेष उल्लेख – आधारभूत संख्याज्ञान में शाब्दिक हिन्दी भाषा (गणितीय भाषा) के इससे युग्मित अर्थज्ञान, प्रतीक निरूपण को भी सम्मिलित किया गया है जैसे उन का अर्थ एक न्यून है, किलो का तात्पर्य एक हजार है, मिली का अर्थ हजारवां भाग है इत्यादि।

10. क्रियात्मक उपकल्पनाएं :– शून्य परिकल्पना :

गतिविधि आधारित आधारभूत संख्या विषयक शिक्षण इस विषय में बालक में दक्षतायें उत्पन्न करने में प्रभावहीन है।

धनात्मक परिकल्पना :– गतिविधियां, आधारभूत संख्या ज्ञान सीखने में सहायक होंगी।

ऋणात्मक परिकल्पना :– गतिविधियां, संख्या ज्ञान को बाधित कर सकती हैं।

11. उपकल्पनाओं की क्रियान्वितिः–

कार्ययोजना

क्र.स.	कार्ययोजना बिन्दु अपेक्षित क्रियाएं	क्रियान्विति के चरण	प्रयुक्त साधन	समयावधि
1.	चरण प्रथम–आधारभूत संख्याज्ञान दक्षता संकलन	सी.सी.ई. चैक लिस्ट, निर्धारित वर्क बुक, पाठ्यक्रम का अवलोकन करके आधारभूत संख्या ज्ञान विषयक दक्षताओं का संकलन किया गया।	पाठ्यक्रम चैकलिस्ट विषय विशेषज्ञ	3 दिन
2.	चरण द्वितीय पूर्व ज्ञान का अवलोकन	चयनित बालकों को समस्या, प्रोजक्ट क्रियात्मक योजना प्रदान कर पूर्वज्ञान का अवलोकन करके लब्धि ज्ञात करना।	पूर्व परीक्षण माला	2 दिन
3.	चरण तृतीय गतिविधि संकलन	इंटरनेट, एकलव्य फाउन्डेशन साहित्य, गणित शोध साहित्य की सहायता से गतिविधियों का संकलन करना।	गणित विषयक गतिविधि सामग्री	4 दिन
4.	चरण चतुर्थ गतिविधि क्रियान्वयन 1 अंक ज्ञान 2 संख्यात्मक भाषा ज्ञान 3 संख्या विश्लेषण स्थानीय मान 4 गुणन संक्रिया 5 भिन्न की अवधारणा 6 मापन	1. कंकड़ों, गुठलियों, तिलियों के बण्डल, एबस्कस की सहायता से संख्या ज्ञान तथा दहाई, सैकड़ा,हजार की अवधारणा विकास। 2. उन का शाब्दिक अर्थ एक न्यून क्रमबद्धता से प्रस्तुत करना तथा अपवाद समझाना– 19 (20–1) उन+विंश = उन्नीस 29 (30–1) उन+तीस = उनतीस 39 (40–1) उन+चालिस = उनचालिस पद्य रचनाः दायें से बायें गिनते जाओ। पहला–दूजा अंक साथ बोलो। तीजे अंक के आगे सौ बोलो। चौथा–पांचवां हजार का । छठा–सांतवां लाख का।। हाथ में पांच, चार, तीन अंगुलियों को उपर करवाकर गुणन सक्रिया अवधारणा विकास एक रोटी, आधी रोटी, दो रोटी बराबर तीन भाग मे बांटना, तीन रोटी बराबर चार भागों में बांटना इत्यादि गतिविधियां किलो अर्थात एक हजार, मिलि अर्थात हजारवां हिस्सा, सेन्टी बराबर सौ वां भाग की समझ का विकास।	गिनने योग्य भौतिक एक रूप सामग्री क्रमबद्धता चार्ट संख्या स्थानीय मान चार्ट वृताकार भिन्नात्मक आकृतियां बाट तथा स्केल	एक माह
5.	चरण पंचम पश्च परीक्षण	आधारभूत संख्या दक्षताओं के सीखने की मात्रा ज्ञान करने लिए समस्यात्मक प्रश्न, क्रियात्मक प्रायोजना, समस्या समाधान का अवलोकन कर लब्धि ज्ञान	पश्च परीक्षण अवलोकन बिन्दु संग्रह	5 दिन

6.	चरण षष्ठ विश्लेषण निष्कर्ष	पूर्व परीक्षण तथा गतिविधि आयोजन पश्चात पुनः परीक्षण में अन्तर ज्ञात करते हुए निस्कर्षन	अंतर तालिका	2 दिन

12. न्यादर्श :– रा.उ.मा.वि., थिरपाली बड़ी के कक्षा एक से पांच के 100 विद्यार्थी।

13. विश्लेषण :– 100 विद्यार्थियों की अवलोकन अवस्थिति तालिका।

क्र. स.	आधारभूत संख्याज्ञान दक्षता	पूर्व अवलोकन अंक			पश्च अवलोकन		
		न्यून 40 तक	मध्य 41–59	उत्तम 60 से ज्यादा	न्यून 40 तक	मध्य 41–59	उत्तम 60 से ज्यादा
1.	क्रमबद्ध संख्याज्ञान	40	35	25	22	15	63
2.	विपरित गिनना	47	33	20	24	28	48
3.	पूर्ववर्ती पश्चवर्ती संख्यां	52	30	18	11	23	66
4.	शून्य की अवधारणा, पूर्ण संख्या	51	35	14	15	27	58
5.	भिन्न की अवधारणा	44	37	19	18	21	61
6.	किलो,मिली,सेन्टी शब्दार्थ अनुप्रयोग	48	36	16	10	19	71
7.	लम्बाई मापन	48	34	18	6	30	64
8.	भार मापन	39	44	17	19	21	60
9.	सरल ज्यामिती प्रयोग	55	36	9	17	47	36
10.	बड़ी संख्या स्थानीयमान	46	32	22	8	12	80
	योग	470	352	178	150	243	607
	मध्यमान	47	35	17.8	15	24.3	60.7
	अन्तर				–32	–10.7	+42.9

आधारभूत संख्याज्ञान गतिविधियों के आयोजन से पूर्व परीक्षण न्यून दक्षता 47, मध्यम 35 तथा उच्च स्तर 18 लब्धियां है जबकि आयोजन पश्चात उत्तम स्तर में 43 प्रतिशतांक तक अभिवृद्धियां हुई हैं, न्यून स्तर में 32 प्रतिशत तक न्यूनता आई है, अतः गतिविधियों की अधिगम में क्षमतायें स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही हैं जो आधारभूत संख्या ज्ञान उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिकायें अदा करती हैं।

14. शोध निष्कर्ष :–

शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा धनात्मक परिकल्पना स्वीकार की जाती है जिसके अनुसार प्राथमिक कक्षाओं में आधारभूत अंकज्ञान दक्षताओं में अभिवृद्धि हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण सक्षम है जो अध्येता को न्यून स्तर से उच्च स्तर पर पहुचा देता है।

15. सुझाव :– आधारभूत संख्या ज्ञान में उन्नयन हेतु एबस्कस, ज्यामिति बक्स अन्य भौतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाए तथा शिक्षण योजना में प्रायोगिक गतिविधियों, स्वयं करके देखना, स्वयं मापन, तोलना, गणना करना, संख्या ज्ञान प्रोजेक्ट का समावेश होना चाहिए ताकि बालकों में संख्या ज्ञान अवधारणा का विकास हो सके।

16. संदर्भ पुस्तक :– एकलव्य फाउन्डेशन भोपाल की क्रियाविधि पुस्तिकाएं।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''सकारात्मक शिक्षक व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

डॉ. किशोर कुमार ढ़ाका, व.अ., राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धोधलिया, चूरू

1. शीर्षक :–

''सकारात्मक व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि का प्रयास।''

2. शोध समस्या की पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं महत्व :–

गुणवतापूर्ण शिक्षा हमारा लक्ष्य है, परन्तु सपने आधे अधूरे रह जाते है, जब बालक के व्यवहार को शिक्षा मापदण्डों के अनुरूप परिमार्जित नहीं कर पाते हैं। इन वाछंनीय उपलब्धियों के अभाव के अनेक कारण हो सकते है। जिसमें सकारात्मक शिक्षक व्यवहार की भूमिका एक मुख्य कारक है। शैक्षिक उपलब्धियों के स्तर को बढ़ाने में सकारात्मक शिक्षक व्यवहार मुख्य भूमिका अदा कर सकता है। अलग–अलग शिक्षक व्यवहार की पृथक–पृथक कार्यशैली होती है। बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताएं भी अधिगम को प्रभावित करती है। इन व्यक्तिगत भिन्नताओं की पहचान करके शिक्षक अपनी कार्यशैली से अधिगम स्तर को प्रभावित कर सकता है। विद्यार्थी के अधिगम के न्यून स्तर अर्थात पिछड़ेपन के अनेक कारकों में सकारात्मक शिक्षक व्यवहार की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। ये भूमिका अधिगम के लिए कितनी असरदार हैं, प्रस्तुत शोध में इसका अवज्ञान हो सकेंगा। ज्यादातर बालक शैक्षिक अवधारणाओं को हदयगम नहीं कर पाते हैं। तथा विषयगत अवधारणाओं की समझ विकसित नहीं कर पाते हैं।

हमारी शिक्षण प्रणाली अव्यवहारिक प्रतीत होती हैं, जब हम बालक में स्वयं समस्या समाधान, स्वतंत्र चिंतन समता का अभाव पाते हैं। बालक के अधिगम में अनेक समस्याएं आती हैं, बालक सीखने के उचित स्तर को प्राप्त नहीं कर पाता हैं। बालक के संज्ञानात्मक डॉमेन तथा भावात्मक डॉमेन विकसित करने में शिक्षकी की भूमिका का अध्ययन करने में बालक के सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करने में आसानी होगी।

सीखने की उत्कृष्टता के लिए सकारात्मक शिक्षक व्यवहार बहुआयामी भूमिकाएं अदा कर सकता है, जैसे नेतृत्वकर्ता परामर्शदाता, विद्यार्थी मित्र, मार्गदर्शक इत्यादि।

शिक्षा में गुणवता का अभाव तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुकूल परिणाम न आने पर सकारात्मक शिक्षक व्यवहार की भूमिका महत्वपूर्ण बन जाती है। शिक्षण की प्रक्रिया मुख्यतः ज्ञान, स्मृति, सूचना तक सीमित न हो कर जीवन के अनुभवों की अभिवृद्धि है। आनन्ददायी शिक्षण, स्वयं करके सीखना, गतिविधियों का समावेश, दल द्वारा प्रायोजना पूर्ण करना, स्वयं सीखने के लिए जिज्ञासु होना, समस्या समाधान, संप्रेषण कौशल, मनो शारीरिक भाषा का विकास पूर्वाग्रह तथा रूढिगत अवधारणाओं से युक्त नवाचारी, पारम्परिक तालमेल, समानता, समता, अन्य को स्वीकार करने जैसे लोकतांत्रिक गुणों से युक्त उच्च मानसिक स्वास्थ्य, मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता इत्यादि सकारात्मक शिक्षक व्यवहार इसमें वांछनीय है।

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक व्यवहार की कमजोर कड़ियों को प्रत्यक्ष अवलोकन विधि से जांचा है ताकि भविष्य की शैक्षिक प्रक्रियाओं में सुधार लाया जा सके। शिक्षक ज्ञान प्रदाता, सुविधा प्रदाता, परामर्शदाता, निर्देशक, विद्यार्थी मित्र, अभिप्रेरणात्मक गत्यात्मक शक्ति है जो विद्यार्थी में ज्ञानात्मक, भावनात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक अर्थात चहुंमुखी विकास संभव कर सकता हैं। प्रस्तुत शोध छात्र शिक्षक व्यवहार अन्तक्रियाओं की विस्तृतः व्याख्या करने में सक्षम है।

3. समस्या सीमांकन :–

अनुसंधान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धोधलिया, चूरू की कक्षा 8 के विद्यार्थी व शिक्षक है।

4. शोध उद्देश्य :–

IV. बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में आने वाली समस्याओं की जानकारी करना।
V. बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में अपेक्षित सकारात्मक शिक्षक व्यवहार की भूमिका द्वारा प्रोन्नत करने का प्रयास।

5. क्षेत्र :– अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया शोध शैक्षणिक विषय के अन्तर्गत आता है।

6. समस्या के कारण व साक्ष्य :–

क्र.स.	समस्या के कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षण प्रक्रिया में अपेक्षित शिक्षक छात्र व्यवहार का अभाव	कक्षा कक्ष का अवलोकन
2.	शिक्षक का विद्यार्थी के साथ अपेक्षानुरूप व्यवहार अभाव	कक्षा कक्ष में अध्ययन मे विद्यार्थियों की रूचि कम होना
3.	कक्षा में विद्यालयों की उपस्थिति कम रहना	छात्र उपस्थिति रजिस्टर
4.	व्यक्तिगत स्तरानुसार शिक्षक का अपेक्षित व्यवहार का अभाव	कक्षा के कुछ छात्रों का स्तर कमजोर होना।
5.	सत्र पर्यन्त शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तरीय परन्तु परीक्षा में प्राप्तांक अपेक्षाकृत कम	बोर्ड परीक्षा का भय, परिणाम के प्रति नकारात्मक विचार

7. समस्या का सीमांकन तथा परिभाषीकरण :–

उक्त समस्या प्राथमिक कक्षाओं तक ही सीमित है तथा इसके अध्ययन हेतु रा.उ.मा.वि., थिरपाली बड़ी के कक्षा एक से पांच तक के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इन हेतु चयनित आधारभूत अंकज्ञान, गिनती, व्युत्क्रम गिनती, अंक क्रमबद्धता, इकाई–दहाई–सैंकड़ा–हजार स्थानीय मान, सरल भिन्न, शुन्य की अवधारणा, अंक प्रतीक चिन्ह, शब्द–अंक रूपान्तरण, योग–बाकी–गुणन–भाजन संक्रियायें आधारभूत गणित संज्ञान के अन्तर्गत सम्मिलित किये गए हैं।

8. परिकल्पना :–

I. शिक्षकों को सकारात्मक व्यवहार के लिए अभिप्रेरित करना।
II. सकारात्मक शिक्षक व्यवहार द्वार बालकों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर प्रोन्नत किया जा सकता है।
III. शैक्षिक उपलब्धि के लक्ष्य की प्राप्ति में सकारात्मक शिक्षक व्यवहार मुख्य भूमिका निभा सकता है।
IV. शिक्षकों का उचित मार्गदर्शन करना।
V. विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना।

9. परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र.स.	कार्ययोजना बिन्दु	कार्य जो करना है	साधन	समयावधि
1.	पूर्व परीक्षण / वर्तमान स्थिति का आकलन	कक्षा कक्ष में दिये गये कार्य का अवलोकन	उतरपुस्तिका अभ्यासपुस्तिका	1 दिन
2.	शैक्षिक उपलब्धि स्तर न्यून होना	शैक्षिक उपलब्धि स्तर न्यून होने के कारणो का जानना।	परख की उतर पुस्तिका	1 दिन
3.	विद्यार्थियों के अभ्यास पुस्तिकाओं की जानकारी प्राप्त करना	निरीक्षण सहयोगी शिक्षकों से परिचर्चा द्वारा	अभ्यासपुस्तिकाएं	1 दिन
4.	अभ्यास पुस्तिकाओं का मूल्यांकन	अवलोकन, अभ्यास पुस्तिकाओं की जांच	अभ्यास पुस्तिकाएं	1 दिन
5.	शिक्षण योजना , शिक्षण सहायक सामग्री	प्रदर्शन विधि द्वारा	विषयागत चार्ट, मॉडल, मानचित्र, ग्लोब	1 दिन
6.	शिक्षण प्रक्रिया में अपेक्षित शिक्षक छात्र व्यवहार	कक्षा कक्ष का अवलोकन	विद्यार्थियों की अध्ययन में रूचि	1 दिन
7.	पश्च परीक्षण / परिवर्तन आकलन	विद्यार्थियों के शैक्षिक उपब्धि में सुधार	परख व अवलोकन द्वारा	1 दिन

12. दत संकलन :–

मेरे शोध में दत संकलन में निम्नलिखित बिन्दु का अनुसरण किया जायेगा।

I. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक के व्यवहार का विद्यार्थियों पर प्रभाव।
II. शिक्षक द्वारा सहायक सामग्री का उचित उपयोग।
III. शिक्षक के कक्षा कक्ष शिक्षण में सकारात्मक व्यवहार का विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया के प्रभावित होने का स्तर जानना।

13. दत संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर–

वर्गीकरण	अंकानुसार	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
मेधावी	7–9	8	21.62
औसत	4–6	13	35.14
कमजोर	1–3	16	43.24
	योग	37	100

M_1=4.35 O_1=2.31

दत संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर–

वर्गीकरण	अंकानुसार	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
मेधावी	7–9	15	40.54
औसत	4–6	14	37.84

कमजोर	1—3	8	21.62
	योग	37	100

M_2=5.57 O_2=2.28 क्रांतिक = 2.30

दत संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर माध्यिमिका = 4.07 है।

दत संकलन अनुसंधान पश्चात् की स्थिति के आधार पर माध्यिमिका = 5.75 है।

अत शिक्षक के सकारात्मक व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 5.75 —4.07 =1.68 वृद्धि हुई है।

14 दत संकलन का विश्लेषण :— उक्त दत संकलन से ज्ञात होता है कि अनुसंधान पूर्व की स्थिति में मेघावी विद्यार्थी 26.62 प्रतिशत औसत 35.14 प्रतिशत तथा कमजोर 43.24 प्रतिशत पर थे बाद में सकारात्मक शिक्षक व्यवहार द्वारा अनुसंधान के बाद मेघावी विद्यार्थी 40.54 प्रतिशत औसत 37.84 प्रतिशत तथा कमजोर 21.62 प्रतिशत हो गये। इस प्रकार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक शिक्षक व्यवहार का अवज्ञान इस शोध से हुआ है। विद्यार्थी के सीखने की अनेक बाधाओं का पता चला है। मध्यान्तर सार्थकता की तालिका में प्रदत क्रान्तिक मान मान सार्थकता स्तर 0.05 गणना द्वारा प्राप्त 2.30 से कम है अतः हम कह सकते है मध्य मानों का अन्तर सार्थक है और हमारे द्वारा किया गया कार्य 95 प्रतिशत तक सार्थक है अर्थात हमारे द्वारा किये गए उपचारात्मक कार्य से परिवर्धन हुआ है $m_1 > m_2$ है अतः हमारे द्वारा किया सुधारात्मक कार्य 95 प्रतिशत तक सार्थक है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

** उपचारात्मक शक्षण प्र क्रया को बेहतर बनाने का प्रयास **

अनुसंधानकर्ता

अनिता चौधरी , प्राध्यापक , राजकीय मोहता बा लका उच्च माध्य मक वद्यालय, राजगढ़ (चूरु)

1. शीर्षक **:---** उपचारात्मक शक्षण प्र क्रया को बेहतर बनाने का प्रयास (वशेष सन्दर्भ सामाजिक- वज्ञान वह वषय)

2. शोध का औ चत्य/आवश्यकता या समस्या का चयन **:----**

एक आदर्श और प्रभावशाली शक्षक का महत्वपूर्ण कार्य अपने वद्या र्थयों की कमजोरियों को पहचान कर उनमें सुधार करना है। इस रूप में उपचारात्मक शक्षण से तात्पर्य वद्या र्थयों की अ धगम संबंधी कठिनाइयों को दूर करना है तथा धीमी गति से सीखने वाले वद्यार्थी की सीखने की क्षमता में सुधार करना है। पारिवारिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों के अनुसार प्रत्येक वद्यार्थी का शै क्षक स्तर अलग-अलग होता है। आज की समावेशी शक्षा के अंतर्गत प्रत्येक वद्यार्थी का सीखना सुनिश्चित करना एक चुनौती बन गया है परंतु यह असंभव नहीं है।

बालकेंद्रित शक्षा के आधार पर शक्षक प्रत्येक वद्यार्थी को उसके सीखने के स्तर के अनुसार शक्षा प्रदान करने का प्रयास करते हैं। निदानात्मक परीक्षण द्वारा वश्लेषण करके वद्या र्थयों की कमजोरियों का पता लगाया जाता है। एक जैसे शै क्षक स्तर के वद्या र्थयों का समूह बनाया जाता है और समूहवार शक्षण योजना बनाकर वद्या र्थयों को शक्षण करवाया जाता है इसके पश्चात् भी कुछ वद्यार्थी कक्षा-स्तर के अनुसार नहीं सीख पाते हैं और सीखने की गति में पीछे रह जाते हैं।

राजकीय उच्च माध्य मक वद्यालय, राजगढ़ (चूरु) की कक्षा 7 में अध्ययन करने वाले कुछ वद्यार्थी निय मत कक्षा- शक्षण के दौरान सामाजिक वज्ञान वषय के अध्ययन में रु च नहीं लेते हैं और ये वद्यार्थी अपना गृहकार्य भी पूर्ण नहीं करके लाते और इनकी सामाजिक वज्ञान सीखने की गति अत्यंत धीमी है। ये वद्यार्थी मान चत्र भरने के कौशल में भी असक्षम हैं और ग्लोब की अक्षांश व देशान्तर रेखाओं की प्राथ मक जानकारी से भी अन भज्ञ हैं। इस लए इन वद्या र्थयों को कक्षा-स्तर पर लाने के लए उपचारात्मक शक्षण की प्र क्रया को बेहतर बनाने के लए इस क्रयात्मक शोध/अनुसंधान को सम्पादित करने की आवश्यकता अनुभव की गई।

3. शोध के उद्देश्य :---

क्रयात्मक शोध के दौरान समस्या के रूप में कुछ दक्ष प्रश्न मेरे समक्ष उत्पन्न हुए जिनका समाधान करने हेतु मैंने निम्न प्रकार उद्देश्यों का निर्धारण कया...

[1] कक्षा- शक्षण के दौरान सामाजिक वज्ञान वषय में न्यून अ धगम करने वाले वद्या र्थयों और उनकी अ धगम संबंधी समस्याओं को चन्हित करना।

[2] उपचारात्मक शक्षण की प्र क्रया को बेहतर कर सामाजिक वज्ञान वषय में न्यून अ धगम करने वाले वद्या र्थयों की समस्याओं का समाधान करना और वद्या र्थयों के अ धगम स्तर में वृ द्ध करना।

4. सीमांकन :--- यह क्रयात्मक शोध राजकीय उच्च मध्य मक वद्यालय, राजगढ़ (चूरु) की उच्च प्राथ मक कक्षा 7 में अध्ययन करने वाले वद्या र्थयों तक सी मत है।

5. समस्या का क्षेत्र :--- मेरी समस्या का क्षेत्र शै क्षक है।

6. समस्या : कारण एवं साक्ष्य :---

क्रम संख्या	समस्या का कारण	समस्या का साक्ष्य
1	कक्षा शक्षण के दौरान कुछ वद्यार्थी सामाजिक वज्ञान अध्ययन में बिल्कुल भी रु च नहीं लेते हैं।	1. शक्षक का कक्षा शक्षण के दौरान अवलोकन
2.	कक्षा में उपस्थित कुछ वद्यार्थी मान चत्र भरने में सक्षम नहीं हैं। उन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं का ज्ञान नहीं है।	1. शक्षक द्वारा वद्या र्थयों से वार्तालाप 2. वद्या र्थयों हेतु कक्षास्तरीय ल खत परीक्षा
3.	कक्षा में कुछ वद्यार्थी ऐसे हैं जो कभी गृहकार्य करके नहीं लाते हैं।	1. वषयाध्यापक से वार्तालाप 2. गृहकार्य पुस्तिका का अवलोकन
4.	कक्षा में शक्षक द्वारा समूहवार शक्षण करवाने के पश्चात् भी कुछ वद्या र्थयों का शै क्षक-स्तर कक्षा-स्तर से निम्न है।	1. वद्या र्थयों से वार्तालाप 2. वद्या र्थयों हेतु कक्षास्तरीय ल खत परीक्षा

7. शोध हेतु परिकल्पनाएं :---

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मैंने संभा वत हल के रूप में निम्न परिकल्पना तैयार की।....

[1] उपचारात्मक शक्षण प्र क्रया को बेहतर बनाकर वद्या र्थयों के सामाजिक वज्ञान के अ धगम में आने वाली समस्याओं का निदान कर के वद्या र्थयों के अ धगम स्तर में वृ द्ध संभव है।

8. परिकल्पना परीक्षण के लए सम्पादित कार्य :---

क्रम संख्या	अपे क्षत क्रयाएं	क्रयान्विति के चरण	अपे क्षत साधन/सामग्री	समयाव ध
1	कक्षाकक्ष शक्षण के दौरान अवलोकन करके सामाजिक वज्ञान वषय में रु च न लेने वाले, न्यून अंत क्रया करने वाले, गृहकार्य न करके लाने वाले और निम्न शै क्षक-स्तर वाले वद्या र्थयों की सूची तैयार करना।	कक्षाध्यापक एवं वषयाध्यापक मलकर यह कार्य करेंगे।	**1.** अवलोकन **2.** गृहकार्य पुस्तिका **3.** वषयाध्यापक से वार्तालाप	1 दिन
2	कक्षा शक्षण से पहले पूर्वज्ञान एवं व्यावहारिक जीवन से वातावरण का निर्माण करना, शक्षण के दौरान कम स क्रय वद्या र्थयों के साथ अ धका धक अंत क्रया कर उन्हें उत्तर देने हेतु प्रोत्साहित करना।	कक्षाध्यापक एवं वषयाध्यापक मलकर यह कार्य करेंगे।	**1.** दैनिक और व्यावहारिक जीवन के उदाहरण **2.** पुनर्बलन और प्रोत्साहन **3.** व्याख्यान व ध द्वारा शक्षण	1 सप्ताह
3	वद्या र्थयों को मान सक स्तरानुरूप शक्षण करवाना और गति व ध आधारित शक्षण का प्रयोग करना, पाठ्यक्रमानुसार धरोहरों, स्मारकों के चार्ट्स, पुराने सक्के, यंत्रों की फोटो, चत्र, मान चत्र ग्लोब आदि से परि चत करवाना।	कक्षाध्यापक एवं वषयाध्यापक	**1.** शक्षण अ धगम सामग्री (**TLM**) जैसे- व भन्न चत्र, मान चत्र, ग्लोब आदि द्वारा शक्षण **2.** प्रोजेक्टर द्वारा प्रदर्शन	1 सप्ताह

4	रु चकर तरीके से खेल-खेल में मान चत्र भरना सखाना,ग्लोब द्वारा अक्षांश व देशान्तर रेखाओं के बारे में परि चत करवाना, बाल-संसद के माध्यम से अ भनय के द्वारा संसद का ज्ञान कराना।	वषयाध्यापक व वद्यार्थी	**1.** खेल द्वारा शक्षण **2.** गति व ध द्वारा शक्षण **3.** प्रोजेक्टर पर प्रदर्शन द्वारा शक्षण **4.** अ भनय द्वारा रु चकर शक्षण	**1** सप्ताह
5	शक्षकों, वद्या र्थयों के अ भभावकों के साथ वद्यार्थी की काउंस लंग एवं वद्यार्थी की दैनिक प्रगति रिपोर्ट पर वचार वमर्श।	शक्षक, अ भभावक एवं वद्यार्थी	**1.** वार्तालाप **2.** वचार वमर्श **3.** वषयाध्यापक से वार्तालाप	1 सप्ताह में तीन बार
6	वद्या र्थयों को निश्चित मात्रा में गृहकार्य देना और प्रतिदिन जाँच कर सुधार करवाना।	वषयाध्यापक अ भभावक एवं वद्यार्थी	**1.** सामाजिक वज्ञान की पाठ्यपुस्तक **2.** वद्यार्थी की गृहकार्य पुस्तिका	**1** सप्ताह

9. प्रयुक्त शोध उपकरण एवं सांख्यिकी **:---**

इस क्रयात्मक शोध में समस्या से संबं धत कारणों एवं तथ्यों का संकलन करने के लए मेरे द्वारा कक्षाकक्ष-अवलोकन, दस्तावेज-अवलोकन, वद्या र्थयों से वार्तालाप, वषयाध्यापक का साक्षात्कार एवं वद्या र्थयों की ल खत परीक्षा (पूर्वपरीक्षा एवं पश्चपरीक्षा) का प्रयोग कया गया है। इन उपकरणों के प्रयोग से शोध कार्य में प्राप्त दत्तों का संकलन करके तथ्यों का सारणीयन कया गया है। तथ्यों के वश्लेषण हेतु मैंने मध्यमान व बारम्बारता सांख्यिकी का प्रयोग कया है।

पूर्वपरीक्षा और पश्चपरीक्षा के परिणामों के तुलनात्मक अध्ययन की सार्थकता की जांच के लए **t** टेस्ट का प्रयोग कया गया है।

मध्यमान = **A.M.+(**$\frac{Efd}{N}$ **)**$*$**C.I.**

A.M. = कल्पित मध्यमान

d = कल्पित मध्यमान से वचलन

N = आवृत्तियों का योग

C.I. = वर्ग वस्तार

= आवृत्ति

= आवृत्तियों व वचलनों के गुणनफल का योग

प्रमाप वचलन (. .) = $\sqrt[i]{\frac{d^2}{N} - \left(\frac{}{N}\right)^2}$

d = कल्पित मध्यमान से वचलन

N = आवृत्तियों का योग

I. = वर्ग वस्तार

= आवृत्ति

= आवृत्तियों व वचलनों के गुणनफल का योग

$$= \frac{1 - 2}{\sqrt{\frac{sd1}{N} + \frac{sd2}{N}}}$$

1 = उपचारात्मक शक्षण से पूर्व परीक्षा का मध्यमान

2 = उपचारात्मक शक्षण के पश्चात् परीक्षा का मध्यमान

Sd1 = उपचारात्मक शक्षण से पूर्व परीक्षा का प्रमाप वचलन

Sd2 = उपचारात्मक शक्षण के पश्चात् परीक्षा का प्रमाप वचलन

10. अनुसंधान/शोध प्र व ध **:---** इस क्रयात्मक शोध में मेरे द्वारा अवलोकन, वार्तालाप एवं ल खत परीक्षा शोध-प्र व ध का प्रयोग कया गया है।

11. न्यादर्श :--- वद्यालय की कक्षा 7 में पढ़ने वाले वद्या र्थयों को निदानात्मक परीक्षण तकनीक द्वारा चयनित कया गया है और कक्षा 7 में सामाजिक वज्ञान वषय को पढ़ाने वाले शक्षक को भी शा मल कया गया है।

12. दत्त संकलन एवं सारणीयन :---

सारणी 1

वद्या र्थयों के नाम	पूर्व परीक्षा के प्राप्तांक पूर्णांक -- 20	पश्च परीक्षा के प्राप्तांक पूर्णांक -- 20	पश्च परीक्ष- पूर्व परीक्षा प्राप्तांकों का अन्तर	धनात्मक प्रगति	धनात्मक प्रगति प्रतिशत
आसमीन बानो	**05**	**10**	**05**	**05**	**25 %**
अफरीन	**02**	**16**	**14**	**14**	**70 %**
अरमान	**05**	**09**	**04**	**04**	**20 %**
हारून	**17**	**19**	**02**	**02**	**10 %**
हवायत	**11**	**18**	**07**	**07**	**35 %**
मो. रिजवान	**08**	**15**	**07**	**07**	**35 %**
मो.तौफीक	**08**	**14**	**06**	**06**	**30 %**
नगीना	**13**	**17**	**04**	**04**	**20 %**
प्रंस	**07**	**15**	**18**	**18**	**90 %**
समीर	**06**	**15**	**09**	**09**	**45 %**
समीर खान	**03**	**09**	**06**	**06**	**30 %**
अल्ताफ	**06**	**16**	**10**	**10**	**50 %**
सोनू	**05**	**12**	**07**	**07**	**35 %**
मो.ऊमर	**02**	**08**	**06**	**06**	**30 %**
मो.इशाक	**10**	**18**	**08**	**08**	**40 %**
नैना	**03**	**17**	**14**	**14**	**70 %**
पंकज	**06**	**10**	**04**	**04**	**20 %**
रुकसार	**07**	**10**	**03**	**03**	**15 %**
रजनीश	**14**	**16**	**02**	**02**	**10 %**
स चन	**12**	**18**	**06**	**06**	**30 %**

13. दत्तों का वश्लेषण :---

उपचारात्मक शक्षण से पूर्व ल खत परीक्षा के दत्तों का वश्लेषण.....

कुल वद्यार्थी 20

कुल प्राप्तांक 20

प्राप्तांक **---5,2,17,12,8,13,7,6,3,10,14,12**

सारणी 2

प्राप्तांक **(C.I.)**	मलान चह्न	बारम्बारता **(f)**	**dx**	**dx2**	**fdx**	**fdx2**
1-4	।।।।	**04**	**-2**	**4**	**-8**	**16**
5-8	।।।।। ।।।।।।	**10**	**-1**	**1**	**-10**	**10**
9-12	।।।	**03**	**0**	**0**	**0**	**0**
13-16	।।	**02**	**1**	**1**	**3**	**3**
17-20	।	**01**	**2**	**4**	**2**	**4**
योग		**20**			**-13**	**33**

मध्यमान = **10.5.+(**$\frac{-13}{20}$ **)∗4**

M1 = 7.9

प्रमाप वचलन (. .1) = $\sqrt[4]{\frac{33^2}{20} - \left(\frac{-13}{20}\right)^2}$

SD1 = 4.43

उपचारात्मक शक्षण के पश्चात् ल खत परीक्षा के दत्तों का वश्लेषण.....

कुल वद्यार्थी 20

कुल प्राप्तांक 20

प्राप्तांक **--- 10,16,9,19,18,15,14,17,12,8**

सारणी 3

प्राप्तांक **(C.I.)**	मलान चह्न	बारम्बारता **(f)**	**dx**	**dx2**	**fdx**	**fdx2**
1-4	**---**	**---**	**-2**	**4**	**0**	**0**
5-8	I	**01**	**-1**	**1**	**-1**	**1**
9-12	IIIII I	**06**	**0**	**0**	**0**	**0**
13-16	IIIII II	**07**	**1**	**1**	**7**	**7**
17-20	IIIII I	**06**	**2**	**4**	**12**	**24**
योग		**20**			**18**	**32**

मध्यमान = **10.5 +(**$\frac{18}{20}$ **)∗4**

M2 = 14.1

प्रमाप वचलन (. .2) = $\sqrt[4]{\frac{32^2}{20} - \left(\frac{18}{20}\right)}$ 2

S.D.2 = 3.56

$$= \frac{7.9 - 14.1}{\sqrt{\frac{(4.43)2}{20} + \frac{(3.56)2}{20}}}$$

= 4.88

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु कार्य योजना लागू करने से पूर्व एवं कार्य योजना के अनुसार उपचारात्मक शक्षण को प्रभावी बनाने के पश्चात् वद्या र्थयों की ल खत परीक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करने पर सारणी 1 व 3 के परिणामों से ल क्षत है क उपचारात्मक शक्षण प्र क्रया को बेहतर बनाने से शक्षण-अ धगम सामग्री के प्रयोग, प्रोजेक्टर द्वारा आकर्षक प्रदर्शन, खेल-खेल में, गति व ध द्वारा मान चत्र और ग्लोब का अभ्यास करवाने से वद्यार्थी जल्दी सीख रहे हैं।

ल खत परीक्षा के परिणामों से भी स्पष्ट होता है उपचारात्मक शक्षण को बेहतर बनाने से वद्या र्थयों के अ धगम स्तर में सकारात्मक वृ द्ध हुई है और सामाजिक वज्ञान अध्ययन में उनकी रु च बढ़ी है। वद्या र्थयों के अ भभावकों के साथ निरंतर संपर्क में रहने और उन्हें वद्यार्थी की दैनिक प्रगति से अवगत करवाते रहने से तथा गृहकार्य में अ भभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करने आदि से वद्यार्थी के शै क्षक स्तर में सकारात्मक सुधार हुआ है।

पूर्वपरीक्षा और पश्चपरीक्षा के तुलनात्मक अध्ययन में सार्थकता परीक्षण..... **t -** वैल्यू का मान 4.**88** प्राप्त हुआ है जिससे यह स्पष्ट है क हमारी वैकल्पिक परिकल्पना 99% सही है अर्थात् यदि उपचारात्मक शक्षण की प्र क्रया को बेहतर बनाया जाए तो वद्या र्थयों के अ धगम-स्तर में प्रभावी और सकारात्मक सुधार होता है।

अत:शोध परिकल्पना सत्य सद्ध होती है क उपचारात्मक शक्षण को बेहतर बनाया जाए तो वद्या र्थयों के अ धगम स्तर में प्रभावी सकारात्मक सुधार लाना संभव है।

14. शोध निष्कर्ष **:---** कक्षा शक्षण के दौरान शै क्षक दृष्टिकोण से कक्षा-स्तर से नीचे के वद्या र्थयों को कक्षा-स्तर पर लाने के लए उपचारात्मक शक्षण की प्र क्रया को बेहतर की प्र क्रया का प्रयास सकारात्मक रहा।

- उपचारात्मक शक्षण प्र क्रया को बेहतर बनाने से वद्या र्थयों की सामाजिक वज्ञान के अध्ययन के प्रति रु च में वृ द्ध हुई है।
- वद्या र्थयों के अ धगम स्तर में अत्य धक वृ द्ध हुई है।
- वद्या र्थयों में आशातीत रुप से मान चत्र भरने का कौशल और सामाजिक वज्ञान के व भन्न क्षेत्रों (ऐतिहा सक, भौगो लक, राजनैतिक आदि) की सकारात्मक समझ उत्पन्न हुई है।

अत: क्रयात्मक शोध में उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बनाई गई परिकल्पना पूर्णत: सत्य सद्ध हुई।

15. सुझाव :---

प्राथ मक एवं उच्च प्राथ मक स्तर पर उपचारात्मक शिक्षण की प्र क्रया को बेहतर बनाकर वद्या र्थयों के अ धगम स्तर में सकारात्मक सुधार कर सकते हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान वद्या र्थयों का निदानात्मक परीक्षण, समूह शिक्षण, शिक्षक का मधुर व्यवहार, शिक्षा शिक्षण से पूर्व वातावरण-निर्माण, पुस्तकीय ज्ञान को पूर्वज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान से जोड़कर पढ़ाना, शिक्षण-अ धगम सामग्री का अ धकतम प्रयोग, वद्या र्थयों को निश्चित मात्रा में गृहकार्य देना और प्रतिदिन जांच करके सुधार करवाना , वद्या र्थयों के अ भभावकों से निरंतर संपर्क में रहना, वद्या र्थयों की निय मत काउंस लंग करना, उनकी शै क्षिक प्रगति पर निरंतर ध्यान देना, वद्या र्थयों की उपलब्धियों पर सकारात्मक पुनर्बलन देना आदि कुछ ऐसे आवश्यक चरण हैं जिन्हें हम अपनाकर उपचारात्मक शिक्षण की प्र क्रया को बेहतर बना सकते हैं ।

16. सन्दर्भ :---

1. बाल मनो वज्ञान
2. व्यवहार वज्ञान
3. कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तक

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''गतिविधि आधारित शिक्षण द्वारा विज्ञान विषय में शैक्षिक गुणवता का प्रयास। ''

अनुसंधानकर्ता

डॉ. सुमन जाखड़, प्रधानाचार्य, राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजगढ़, चूरू

1. शोध शीर्षक :---- गति व ध आधारित शक्षण द्वारा वज्ञान वषय में शैक्ष णक गुणवत्ता का प्रयास

2. शोध का औ चत्य/शोध की आवश्यकता/समस्या की पृष्ठभू म :----

वज्ञान वह व्यवस्थित ज्ञान या वद्या है जो वचार , अवलोकन अध्ययन और प्रयोग से मलता है। इसे दैनिक जीवन और पर्यावरण से जोड़कर , बालक की इंद्रियों को समावे शत करके पढ़ाया जाए तो वज्ञान शक्षण प्रभावी हो जाता है। वज्ञान शक्षण के दौरान क्रयात्मकता , स क्रयता और सजगता बनी रहे तो वद्यार्थी की सभी इंद्रियां क्रयाशील हो जाती हैं और वातावरण सरस बना रहता है जिससे पढ़ाई बो झल व ऊबाऊ नहीं लगती और रु चकर बन जाती है। सीखने के प्रतिफलों में भी सकारात्मक वृ द्ध होती है।

वर्तमान शक्षा पद्धति में पाठ्यक्रम को गति व ध आधारित बनाया गया है। ऐसे शक्षण के द्वारा छात्र व शक्षक दोनों मलकर गति व ध संपन्न करते हैं शक्षण

अ धगम तब तक सफल नहीं माना जा सकता जब तक क शक्षक के सखाने की गति और शक्षार्थी के सीखने की गति समान नहीं हो जाती। गति व ध आधारित शक्षण में शक्षार्थी स क्रय रूप से अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करता है और स्वयं करके सीखता है इससे रु चकर , आसान और प्रभावी व गुणवत्तापूर्ण शक्षण होता है। इस दृष्टि से गति व ध आधारित शक्षण एक आदर्श व ध है। अतः गति व ध आधारित वज्ञान शक्षण के द्वारा वद्या र्थयों के अ धगम में गुणवत्ता लाने हेतु क्रयात्मक शोध संपादित करने की आवश्यकता अनुभव की गई।

3. शोध का उद्देश्य :---

[1] आधारित शक्षण से वद्या र्थयों में वज्ञान वषय के प्रति रु च उत्पन्न हो सकेगी।

[2] आधारित वज्ञान शक्षण से वद्या र्थयों में सीखने के प्रतिफलों में वृ द्ध हो सकेगी।

[3] वद्या र्थयों में गति व ध आधारित वज्ञान शक्षण से वज्ञान वषय संबंधी कौशल का वकास हो सकेगा।

4. समस्या का सीमांकन :--- यह क्रयात्मक शोध/अनुसंधान राजकीय मोहता बा लका उच्च माध्य मक वद्यालय, राजगढ़ (चूरु) की कक्षा 6, 7, 8 के वद्या र्थयों में गति व ध आधारित शक्षण द्वारा वज्ञान वषय में शैक्ष णक गुणवत्ता लाने के प्रयास हेतु सी मत है।

5. समस्या का क्षेत्र :--- शै क्षक

6. समस्या : कारण व साक्ष्य :---

क्रम संख्या	समस्या का कारण	साक्ष्य
1.	कक्षाकक्ष में शक्षण के दौरान वद्या र्थयों की वज्ञान वषय में न्यून रु च	**1.** शक्षक का अवलोकन **2.** वद्या र्थयों हेतु स्वनि र्मत प्रश्नावली (पूरवपरख,पश्चपरख)
2	वद्या र्थयों की वज्ञान सीखने की धीमी गति	**1.** कक्षा शक्षण के दौरान न्यून अंत क्रया
3	वद्या र्थयों में वज्ञान संबंधी कौशल का अभाव	**1.** वज्ञान शक्षण कराने वाले शक्षक का अवलोकन

	(नामां कत चत्र बनाने, स्वयं प्रयोग करने में असक्षम)	**2.** वद्या र्थयों हेतु स्वनि र्मत प्रश्नावली (पूर्वपरख,पश्चपरख)

7. शोध की परिकल्पनाएं **:---**

[1] गति व ध आधारित वज्ञान शक्षण से वद्या र्थयों में वज्ञान वषय के प्रति रु च उत्पन्न करना संभव होगा।

[2] गति व ध आधारित शक्षण से वद्या र्थयों में सीखने के प्रतिफलों में वृ द्ध करना संभव होगा।

[3] गति व ध आधारित वज्ञान शक्षण से वद्या र्थयों में वज्ञान वषय संबंधी कौशल का वकास संभव होगा।

8. परिकल्पना परीक्षण हेतु कार्य योजना **:---**

क्रम संख्या	अपे क्षत क्रयाएं	क्रयान्विति के चरण	अपे क्षत सामग्री/साधन	समयाव ध
1.	**1.** गति व ध आधारित वज्ञान शक्षण द्वारा वद्या र्थयों में वज्ञान वषय के प्रति रु च उत्पन्न करने के लए वज्ञान शक्षण को दैनिक जीवन और वातावरण से जोड़कर पढ़ाने का प्रयास। 2. वद्या र्थयों द्वारा सकारात्मक उत्तर देने पर उन्हें पुनर्बलन देना।	शक्षक दैनिक जीवन के उदाहरणों से जोड़कर वज्ञान का शक्षण करेंगे। सही उत्तर देने पर शक्षक वद्यार्थी को पुनर्बलन देंगे।	दैनिक जीवन और व्यवहार में वज्ञान के उदाहरणों द्वारा अध्यापन, प्रदर्शन हेतु प्रोजेक्टर आदि	एक सप्ताह
2.	कक्षाकक्षा शक्षण अ धगम	शक्षक व	वज्ञान कट उपकरण,	एक सप्ताह

	सामग्री एवं उपकरणों द्वारा प्रत्यक्ष परिणाम निकालने के लए प्रयोग करना सखाने पर जोर।	वद्यार्थी मलकर इस कार्य को संपन्न करेंगे।	चार्ट्स, उत्तल व अवतल लेंस, उत्तल व अवतल दर्पण, परमाणु मॉडल , पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित **TLM** ,प्रदर्शन हेतु प्रोजेक्टर आदि	
4.	शक्षक की देखरेख में वद्या र्थयों द्वारा स्वयं प्रयोग करके देखना और उन्हें परिणामों पर पहुंचने हेतु प्रेरित करना।	शक्षक की देखरेख में वद्यार्थी स्वयं प्रयोग करेंगे और निष्कर्ष पर पंहुचचने का प्रयास करेंगे।	पाठ्यवस्तु से संबं धत प्रयोग करने की सामग्री	एक सप्ताह

9. न्यादर्श **:---** राजकीय मोहता बा लका उच्च माध्य मक वद्यालय, राजगढ़ (चूरु) की कक्षा 6, 7, 8 की छात्राओं को याद्दच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा सम्मि लत कया गया है।

10. अध्ययन व ध/शोध व ध **:---** प्रस्तुत क्रयात्मक शोध में दो प्रकार के उपकरणों के माध्यम से दत्त संकलन कया गया है।

1. अवलोकन उपकरण
2. पूर्वपरख प्रश्नावली (स्वनि र्मत) व पश्चपरख प्रश्नावली (स्वनि र्मत)

11. उपकरण **:---** वद्यालय में वद्या र्थयों के मूल्यांकन हेतु स्वनि र्मत प्रश्नावली के माध्यम से दत्त संकलन का कार्य कया गया है।

1. अवलोकन -- 12 फरवरी 2022
2. पूर्वपरख -- 12 फरवरी 2022
3. पश्चपरख -- 19 फरवरी 2022

12. सांख्यिकी **:---** प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी वश्लेषण हेतु औसत एवं प्रतिशत का प्रयोग कया गया है।

13. दत्त संकलन एवं सारणीयन :---

प्रश्न संख्या	पूर्वपरख हां	पश्चपरख हां	पूर्वपरख हाँ प्रतिशत	पश्चपरख हाँ प्रतिशत	धनात्मक प्रगति प्रतिशत में
1	**16**	**02**	**66.67 %**	**08.33 %**	**58.34 %**
2	**08**	**24**	**33.33 %**	**100.00 %**	**66.67 %**
3	**12**	**24**	**50.00 %**	**100.00 %**	**50.00 %**
4	**10**	**22**	**41.67 %**	**91.67 %**	**50.00 %**
5	**10**	**21**	**41.67 %**	**87 50 %**	**45.83 %**
6	**05**	**24**	**20.83 %**	**100.00 %**	**79.17 %**
7	**08**	**22**	**33.33 %**	**91.67 %**	**58 34 %**
8	**06**	**24**	**25.00 %**	**100.00 %**	**75.00 %**
9	**10**	**24**	**41.67 %**	**100.00 %**	**58.33 %**
10	**09**	**24**	**37.50 %**	**100.00 %**	**62.50 %**
11	**05**	**22**	**20.83 %**	**91.67 %**	**70.84 %**
12	**06**	**24**	**25.00 %**	**100.00 %**	**75.00 %**
13	**10**	**24**	**41.67 %**	**100.00 %**	**58.33 %**
14	**06**	**22**	**25 00 %**	**91.67 %**	**66.67 %**
15	**08**	**20**	**33.33 %**	**83 33 %**	**50.00 %**
16	**12**	**23**	**50.00 %**	**95.83 %**	**45.83 %**
17	**05**	**20**	**20.83 %**	**83.33 %**	**62.50 %**
18	**12**	**24**	**50.00 %**	**100.00 %**	**50.00 %**
19	**08**	**24**	**33.33 %**	**100.00 %**	**66.67 %**
20	**14**	**24**	**58.33 %**	**100.00 %**	**41.67 %**
योग			**733.32**	**1825**	**1040.01**

14. दत्त वश्लेषण एवं व्याख्या :---

सारणी के आंकड़ों का ग णतीय वश्लेषण :---

पूर्वपरख औसत प्रतिशत **----733.32/20 = 36.67 %**

पश्चपरख औसत प्रतिशत **:---1825/20 = 91.25**

उपलब्धि प्रतिशत प्राप्त..... **91.25 - 36.67 = 54.58 %**

धनात्मक प्रगति हुई --- 54**.58 %**

दत्त वश्लेषण से स्पष्ट होता है क गति व ध आधारित शक्षण से वज्ञान वषय में वद्या र्थयों की रु च में सार्थक एवं सकारात्मक वृ द्ध हुई ।

15. निष्कर्ष **:---** गति व ध आधारित शक्षण द्वारा वज्ञान वषय में शैक्ष णक गुणवत्ता का प्रयास सफल रहा।

- वद्या र्थयों में वज्ञान वषय के प्रति रु च उत्पन्न हुई।
- वद्या र्थयों के सीखने के प्रतिफलों में पर्याप्त वृ द्ध हुई।
- वद्या र्थयों में वज्ञान संबंधी कौशल का वकास हुआ।

अत: तीनों परिकल्पनाएं सत्य सद्ध हुई।

16. सुझाव **:---** उच्च प्राथ मक कक्षाओं में गति व ध आधारित शक्षण, वज्ञान वषय के शक्षण का प्रभावी तरीका है। अतः शोध से प्राप्त परिणामों के आधार पर भ वष्य हेतु यह सुझाव है क प्रत्येक वद्यालय में गति व ध आधारित शक्षण द्वारा वज्ञान वषय में शैक्ष णक गुणवत्ता में सार्थक व सकारात्मक वृ द्ध की जा सकती है।

17. परि शष्ट **:---**

शक्षा एवं प्र शक्षण संस्थान , चूरू

क्रयात्मक शोध/अनुसंधान (वद्यालय-स्तरीय) सत्र 2021-22

शोध शीर्षक **:--** गति व ध आधारित शक्षण द्वारा वज्ञान वषय में शैक्ष णक गुणवत्ता का प्रयास

उपकरण **:---** वद्या र्थयों **/** छात्रों के लए स्वनि र्मत प्रश्नावली (पूर्वपरख एवं पश्चपरख हेतु)

छात्र का नाम व कक्षा .....

वद्यालय का नाम.....

क्रम संख्या	प्रश्न ववरण	हाँ/ नहीं
1	वज्ञान वषय पढ़ने में कठिन है।	हाँ/ नहीं
2	वज्ञान पढ़ने में आपका मन नहीं लगता।	हाँ/ नहीं

3	वज्ञान के अध्यापक आप को पढ़ाते समय डांटते हैं।	हाँ/ नहीं
4	वज्ञान वषय रु चकर है।	हाँ/ नहीं
5	वज्ञान के प्रयोग आपको रोचक व मजेदार लगते हैं।	हाँ/ नहीं
6	आपके वज्ञान अध्यापक आपको पढ़ाते समय प्रयोग करके दिखाते हैं।	हाँ/ नहीं
7	वज्ञान आपका सबसे प्रय वषय है।	हाँ/ नहीं
8	आपको कक्षा शक्षण के दौरान शक्षण अ धगम सामग्री [**TLM**] का प्रयोग करके वज्ञान पढ़ाया जाता है।	हाँ/ नहीं
9	आप वज्ञान वषय के चत्र स्वयं बना सकते हैं।	हाँ/ नहीं
10	आप चत्रों में नामांकन भी करते हैं।	हाँ/ नहीं
11	आप वज्ञान वषय के प्रयोग स्वयं करके देखते हैं।	हाँ/ नहीं
12	आपके अध्यापक कक्षाकक्ष शक्षण में वज्ञान कट का उपयोग करते हैं।	हाँ/ नहीं
13	आपको वज्ञान कट के उपकरणों के नाम याद है।	हाँ/ नहीं
14	आपका स्वयं से ही वज्ञान पढ़ने का मन करता है।	हाँ/ नहीं
15	आप दैनिक जीवन में वज्ञान का उपयोग करते हैं।	हाँ/ नहीं
16	पाठ्य पुस्तक में दिए गए क्रयाकलाप घर पर जाकर हल करते हैं।	हाँ/ नहीं
17	आप बड़े होकर वैज्ञानिक बनना चाहते है।	हाँ/ नहीं
18	आप अपना वज्ञान का गृहकार्य निय मत रूप से करते हैं।	हाँ/ नहीं
19	आपके वज्ञान अध्यापक कक्षा में समूह बनाकर प्रश्नोत्तरी प्रतियो गता करवाते हैं।	हाँ/ नहीं
20	आपके वज्ञान वषय के अध्यापक व्यावहारिक जीवन में वज्ञान संबं धत चीजों का अवलोकन करवाते हैं।	हाँ/ नहीं

18. सन्दर्भ :--

1. उच्च प्राथ मक कक्षाओं में पाठ्यक्रम आधारित वज्ञान पुस्तक।
2. बाल मनो वज्ञान।
3. दैनिक जीवन और पर्यावरण में घटित होने वाली वैज्ञानिक क्रयाएं।
4. व्यावहारिक जीवन में होने वाली वैज्ञानिक क्रयाएं।